आमुख

गणतन्त्र-दिवस के अवसर पर राजधानी में जहा अन्य अनेक समारोह होते रहे है वहा इस बात का अनुभव हुआ कि इसमें कवि-गिरा का योग भी होना आवश्यक है। यह गिरा दिग्दिगत में गूँजे, इसके लिए आकाशवाणी से अच्छा कौन माध्यम हो सकता था?

अतएव विगत २५ जनवरी, १६५६, को एक अखिल-भारतीय कवि-सभा का आयोजन हुआ जिसका उद्घाटन प्रधानमन्त्री तथा साहित्य अकादेमी के सभापति श्री जवाहरलाल नेहरू ने किया।

इस अवसर पर भारतीय विधान में गिनाई गई सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के शीर्ष कविगण उपस्थित थे। यह पहला अवसर था, कदाचित् भारतीय इतिहास में पहला अवसर था, जब कि एक मच पर एकत्र होकर चौदह भारतीय भाषाओ के कवियों ने अपनी अमृतवाणी का सुख श्रोताओं को दिया। हिन्दी कवियों ने इतर भाषाओं के कवियों के प्रति अपनी श्रद्धाजलि के रूप में उनकी कविताओं के पद्यानुवाद प्रस्तुत किए।

इस स्मरणीय अवसर की स्मृति जगाए रखने के उद्देश्य से, वहा पढी गई मूल तथा अनूदित कविताओं का सग्रह प्रस्तुत है।

समारोह में संस्कृत और उर्दू कविताओ के अनुवाद नहीं पढ़े गए थे। पाठकों के लाभ के लिए इस सग्रह में उनके गद्यानुवाद दे दिए गए हैं। उडिया-कवि डा० मायाधर मानसिंह उपस्थित नहीं हो सके थे, उनकी कविता पढ़ दी गई थी।

भारत की सांस्कृतिक एकता

डा० केसकर का स्वागत भाषण

आज आल इंडिया रेडियो की तरफ से आप सबका मैं यहां हार्दिक स्वागत करता हूँ।

आल इंडिया रेडियो पिछले तीन चार साल से भारत की सांस्कृतिक एकता के बारे में लगातार कोशिश कर रहा है। रेडियो के लिए यह फख्र हासिल है कि अगर आज किसी ने हमारी भाषाओं को बनाने में, उनका साहित्य बढ़ाने मे, ज्यादा से ज्यादा मदद की होगी तो वह रेडियो ने की है। आज ऐसी बहुत सी हमारी भाषाएं है कि जिनकी पिछले कई सालों की प्रगति केवल रेडियो की वजह से है। आज रेडियो ही एक माध्यम है जो ज्यादातर अपना काम हमारी भाषाओं में करता है, अंग्रेजी में नहीं करता। पिछले तीन चार साल मे हम लगातार इस कोशिश में है कि भारत की जो अलग-अलग भाषाएं हैं उनको नजदीक लाकर भारत की एकता को और मजबूत किया जाये। इसलिए अलग-अलग भाषाओं की जो रचनाएं है, जो किताबें है, जो कविताएं हैं, उनको दूसरी भाषाओं मे तर्जुमा करना या अनुवाद करना, उनकी जो अच्छी से अच्छी किताबे है उनको दूसरी भाषाओं मे करना, और रेडियो के जरिये उनका प्रकाशन करना, यह लगातार जारी है। हम कह सकते है कि इस तरीके से रेडियो भारत की अलग-अलग भाषाओं को एक दूसरे के पास लाकर देश की एकता को मजबूत कर रहा है। यह देश की सांस्कृतिक एकता के लिए सबसे बड़ा और जबर्दस्त साधन है।

इससे अच्छा क्या हो सकता है कि आज गणतन्त्र-दिवस के साथ रेडियो भी हमारी भाषाओं के अच्छे से अच्छे और उज्ज्वल से उज्ज्वल प्रतिनिधियो को एक साथ लाकर हमारी संस्कृति की जो विविधता है, जो विचित्रता है, और जो एकता है, उसको एक साथ ही दिखला दे?

खुशी की बात है कि हमारे प्रधानमंत्री आज यहां उपस्थित हैं और

उन्होंने इस कार्य के लिए अपने बहुमूल्य समय में से थोड़ा सा दे दिया है। आज अगर हमने उनको आमन्त्रित किया है तो वह केवल बहैसियत प्रधान मन्त्री के ही नहीं बल्कि बहैसियत साहित्य अकादेमी के चेयरमैन के भी। हम सब जानते हैं कि सांस्कृतिक कामों में उनकी दिलचस्पी कितनी गहरी है और अगर आज हमारे देश में सांस्कृतिक कामों के बारे मे कुछ प्रगति हुई है, कुछ दिलचस्पी बढ़ी है, तो उसमे बहुत कुछ स्फूर्ति उनकी है। मै उनसे प्रार्थना करूंगा कि वह यहा चन्द शब्द कह कर आए हुए कवियों को और हम सब को उत्साहित करें।

भाषाओं का आपसी सम्बन्ध

श्री जवाहरलाल नेहरू का उद्‌घाटन भाषण

आज हम यहा जमा हुए हैं, इस कवि सम्मेलन मे, जिसमें भारत के अनेक भाषाओं के कवि हैं। थोडी देर में आप उनकी कविता सुनेंगे।

आप मुझसे पूछें कि ऐसी कवियो की बिरादरी में तुम कैसे पहुँच गए ? तो बात तो यह है कि इसका मेरे पास कोई माक़ूल जवाब नहीं है, क्योकि उमर भर मे मैंने किसी भाषा में भी कभी कविता नहीं लिखी है। फिर भी मैं आपके सामने हाज़िर हुआ, क्योकि मुझे यह हुक्म मिला, प्रधानमन्त्री की हैसियत से तो नहीं, क्योंकि प्रधान-मत्रियो में जो कुछ खूबिया हों, यह सुनने में नहीं आया है कि वह कवि भी हुआ करते हैं। यह सही है कि साहित्य से और कविता से मुझे प्रेम है, लेकिन बहुतों को होता है। तो मै बुलाया गया शायद इसलिए कि मैं साहित्य अकादेमी का सदर हू और कुछ इस अकादेमी ने सब भाषाओं में देश के साहित्य को, कविता को, बढाने की कोशिश की है।

मैं समझता हूँ कि हमारा देश, या कोई भी देश, कितनी ही तरक्की करे, अगर उसका साहित्य और कविता तरक्की नहीं करती तब वह कुछ बेजान रहेगा। साहित्य एक चीज, चाहे थोड़ी हो, लेकिन वह एक चीज है जिसके बगैर किसी देश या किसी जाति में जान नहीं आती, और मैं इसको आवश्यक समझता हूँ कि एक देश की उन्नति मे उसका साहित्य भी आगे बढ़े। बल्कि एक और तरह से मै आप से कहूँ कि अगर किसी देश के बारे में मुझे कुछ नहीं मालूम हो कि वहा कैसा काम होता है, कितनी तरक्की हुई है, क्या क्या कारखाने बने हैं, क्या क्या योजनाए चल रही हैं, क्या क्या फाइव-इयर प्लैन्ज हैं, और खाली उसके साहित्य को मैं कुछ जानू, तो उस साहित्य से झलक पड़ जाएगी कि उस देश में जान है कि नहीं है, वह देश आगे बढ रहा है कि सुकड़ रहा है, या जमा हुआ है। इसलिए साहित्य, जाहिर है, एक बहुत ही आवश्यक चीज़ है। अब साहित्य या कविता कोई ऐसी चीज तो नहीं है कि आप एक मशीन चलाइए उसमें से निकलती आए, या रेडियो वाले हुक्म

दें तो कविताएं निकलती आएं किसी कारखाने से। वह या तो दिल से निकलती है, दिल और दिमाग से, नहीं तो कोई नक़ली चीज उसकी जगह आ जाती है। तो हमें कोशिश करनी है कम से कम कि ऐसी हवा, ऐसी फिजा हो, वायुमंडल हो, जिसमें यह चीज बढ़ सके।

लेकिन भारत में, सब जानते हैं, कि बहुत सारी प्रसिद्ध भाषाएं हैं। उनका एक-दूसरे से सम्बन्ध काफी है, और कभी कभी ऐसा काफी सम्बन्ध है कि एक दूसरे से लड़ा करती हैं और यह समझती हैं कि हम एक दूसरे को दबा के आगे बढ़ेंगे या हम जबर्दस्ती किसी की छाती पे बैठ जाएंगे। तो भाषा तो इस तरह से बढ़ती नहीं है, न साहित्य बढ़ता है। जैसे कि फूल निकलते हैं और बढ़ते हैं उस तरह से यह चीज़ें बढ़ती हैं। मुझे इस बात का पक्का विश्वास है कि भारत की भाषाएं एक दूसरे से मिलकर और एक दूसरे के सहयोग से बढ़ेंगी। इसके माने यह नहीं हैं कि कोई एक दूसरे को दबाए। लेकिन इसके माने यह ज़रूर हैं कि एक-दूसरे से सीखें, भाषाओं में एक दूसरे के विचार आएं, एक दूसरे के शब्द आएं, और एक दूसरे के ढंग आएं। इस तरह से भारत के साहित्य का मैदान बहुत बड़ा हो।

मैं तो, खैर, उसको और भी बढ़ाने को तैयार हूँ कि साहित्य एक चीज, आखिर में, एक देश की नहीं बन सकती है, वह सारी दुनिया की चीज़ है। जितने ऊँचे साहित्य हैं, या दुनिया के साहित्य में जो ऊँची चीजें लिखी गई हैं, वह दुनिया भर की हैं। किसी एक भाषा की और किसी एक देश की नहीं हैं। इसलिए अगर कोई साहित्य बढ़ना चाहे तो उसकी खिड़कियां और दरवाज़े सारी दुनिया की हवाओं के लिए खुलने चाहिए। हां, अपना ढंग उसका होगा ही, और ढंग रखना है, नक़ल करने से तो कुछ नहीं होता।

तो यह विशेषकर आवश्यक है कि हमारे देश की जो भाषाएं हैं वह एक दूसरे से बहुत करीब का सम्बन्ध रखें। एक दूसरे की भाषा को हम पढ़ें, सीखें-समझें, और यह विचार जम जाय कि देश में अगर एक भाषा बढ़ती है तो उसके बढ़ने का असर और भाषाओं पर भी अच्छा पड़ता है, वह भी बढ़ती हैं। यह नहीं कि किसी और को धकेल के वह बढ़ती है।

तो यह, जो आज एक सम्मेलन है और जिसमें आप भारत की बहुत सारी भाषाओं में कविताएं सुनेंगे—और उनका अनुवाद भी होगा हिन्दी में, उसके बाद—यह एक अच्छी चीज है, क्योंकि यह उनका मिलना आपको दिखाती है जो जरूरी है।

इस तरह से हम साहित्य अकादेमी [illegible] न कोशिश कर रहे हैं कि सब भाषाओं की सहायता करें, खाली [illegible] अगर [illegible] साहब कुछ

और समझते है तो गलत समझते हैं। साहित्य अकादेमी देश की सब भाषाओं की उन्नति चाहती है, और उनकी सहायता करना चाहती है और उनको क़रीब लाना चाहती है। हम उसमे, थोड़े दिनो मे, किताबें निकाल रहे है, एक भाषा के दूसरे मे अनुवाद। जिसमें सारे देश की भाषाओं का साहित्य आप पढ सकें। चाहे एक ही भाषा को आप जानें, तो और को भी आप जान लें, उनकी कविता, और उनका साहित्य। दुनिया के और देशो के साहित्य का भी हम इस तरह से अनुवाद अपने देश की सब भाषाओ में करना चाहते हैं। बाहर के देशों की भाषाओ की किताबो की एक लम्बी फेहरिस्त भी हमने बनाई है जिनका अनुवाद यहा की सब भाषाओं में हो। इस तरह से मै समझता हूँ हम अपनी भाषाओं की सहायता करेंगे और उनका मैदान ज्यादा फैलेगा, वसीअ होगा।

खैर, यह सब तो सहायता करने के तरीके हैं। आख़िर मे भाषा बढती है अच्छे साहित्यकारों से, अच्छे कवियों से। कोई ऊपर के धकेलने से तो बढती नहीं है। लेकिन मुझे विश्वास है कि हमारे देश में ऐसे लोग हैं और ऐसे लोग पैदा होते जाएगे।

तो अब आप कविता सुनिए जिसके लिए आप यहा जमा हुए हैं, या दूर दूर से सुन रहे होंगे, और यह उचित है कि आज के कवि सम्मेलन में, आज की कविताओ में, सब में पहले सस्कृत की हो।

★

संस्कृत

कवि श्री महादेव पाण्डेय
रूपान्तरकार . श्रीमती इन्दुजा अवस्थी

संस्कृत साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान् और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत महाविद्यालय के प्रधान तथा साहित्य विभाग के अध्यक्ष हैं। 'भारतशतकम्' की रचना की है।

भारत-वंदना

यस्मादेते प्रसूता विविधतनुभृतो येन जीवन्ति भूता
यस्मिन् गच्छन्ति चैक्य समधिकगुरुता यत्र मातु पितुश्च ।
विश्व सर्व बिभर्ति प्रकृतिरयमथो पूरुषश्च स्वतन्त्रो
देश त वा परेश सुरवरझरिणीसुन्दर कीर्तयाम ॥१॥
आलोलोल्लोलमालाकलकलकलिताम्भोधिकूलाल्ललामाद्
यावन्नीहारभूमीधरधवलशिलालग्नभूसविभागान् ।
सीमान्तादा च वगोपसरिदधिपतिं यावदस्त्येष सम्यै
पत्रश्यामैर्द्रुमाग्रैर्वलयितवसुधो भारत नाम देश ॥२॥
वगै सगीतकीर्ति कलितकलकलश्चोत्कलैरान्ध्रवन्धु-
र्मद्रैरुन्निद्रमुद्रो जवजनितजयोद्गुर्जर सिन्धुविन्दु ।
पचापैरचितश्रीमंधुमधुरधुरी मध्ययुक्तैर्विहारै-
रार्यावर्ताभिधानो जयति जनपदो मानिना जन्मभूमि ॥३॥

आद्योन्मेषाद् विधातु प्रथमविकसितादाद्यपद्‌माग्रपत्रा-
दारब्धा पुण्यपुजे कलुषलवलवनाप्यसभिन्नगात्रै. ।
देवैरप्यात्मलाभ श्रयितुमतितरा वाञ्छिता विश्वमूर्ते-
र्निर्माणोत्कर्षसीमा परमसुषमया कापि नीराज्यते भू ॥४॥

गोर्वाणै. पुण्यपुजो मधुमथनकलाकेलिनारिप्रसद्म-
क्रीडारग प्रकृत्या मणिगणनिकरै शैववैर्वेदवाग्भि. ।
पूर्त्राभावा विशिष्टाध्ययनगुरुकुल शिक्षयारम्भभूमि
सस्कृत्या सुप्रसूति सहजसुकृतिनामेष देशो गृहीत. ॥५॥

हम स्वर्गंगा के समान मनोरम उस भारत देश का कीर्त्ति-गान करते हैं, जिसमें विविध वृक्ष-वनस्पतियाँ हैं, जो प्राणियो के जीवन का आधार है ; और जिसमें सभी प्राणी वन्धु-भाव से रहते हैं ; माता-पिता का जहाँ समादर है ; प्रकृति विश्व का संभरण करती है ; और 'पुरुष' स्वतत्र है ।

भारत देश के कूल कलकल लहरियों से ललाम हैं ; हिमाच्छादित पर्वत-श्रेणियो से इसकी भूमि सुशोभित है ; शस्य और वृक्ष-पत्रो की हरीतिमा से यह वसुधा को अलकृत करता है ; इसके सीमान्त पर वंग देश के उपान्त का सागर उल्लसित है ।

मनस्वी-जनों की जन्मभूमि आर्यावर्त्त की जय हो; जहाँ वग-देश का कीर्तिवान सगीत है; जहाँ उत्कल का कलित कलकल है; जहाँ आन्ध्र-निवासियों की जाग्रत मुद्रायें हैं ; जहाँ सागर-विजयी गुजरात देश है ; जो पंजाव देश से श्रीवेश है; मध्यदेश और बिहार से जिसका केन्द्र प्रवेश मधुयुक्त है ।

यह आदि देश विधाता के प्रथम पद्म-पत्र सा विकसित हुआ है ; यह भूमि पुण्य-पुंज, निष्कलुष देव गणों के अवतरण की वांछनीया है ; यह ब्रह्मा की सर्वोत्तम रचना है ; अपनी परम सुषमा से समस्त पृथ्वी का शृंगार है ।

यह देश सुकृतियो का आगार है । देवताओ ने अमृत-मथन का पुण्य-कार्य यहीं सम्पन्न किया । मणियो से यहाँ की प्रकृति समृद्ध है । यह वेदाध्यायी जनो की भूमि है । शिक्षा के आदि-स्थान गुरुकुल यहीं हैं । यह सस्कृति-गर्भा भूमि है ।

असमिया

कवयित्री श्रीमती नलिनी बाला देवी
रूपान्तरकार श्री हंसकुमार तिवारी

असम की प्रसिद्ध कवयित्री। १८९७ में गौहाटी के प्रसिद्ध बार्दोलोई घराने में जन्म। आधुनिक ढंग की शिक्षा नहीं मिली, जो कुछ सीखा जीवन से और अपने वंश की उदार और स्वदेश-भक्तिपूर्ण परम्परा से। 'पिता' शीर्षक उनकी प्रथम कविता १२ वर्ष की अवस्था में एक पत्रिका में छपी। छोटी अवस्था में वैधव्य ने उनको अध्यात्म की ओर आकर्षित किया। उनकी रचनाओं में रहस्यवाद है, प्रकृति और आध्यात्मिक प्रेम के गीत हैं। 'सधियार सुर', 'सपोनार सुर', और 'पारस मनि' उनके कविता-संग्रह हैं। अपने पिता स्वर्गीय नवीनचन्द्र बार्दोलोई का जीवनचरित्र भी इन्होंने 'स्मृतितीर्थ, शीर्षक से लिखा है। रवींद्रनाथ ठाकुर की कविता से बहुत प्रभावित हुई हैं। १९५४ में असम साहित्य सभा की अध्यक्षा चुनी गईं।

आह्वान

पूवाले मुक्तिर उषा जिलिकिछे पूवे पूवारुण ।
प्रजातन्त्र भारतर जनगण उलाह मगण,
नव प्रभातर नूतन दिनर नूतन वछरे आनि,
घोषणाइ दिले मुक्त भारतत नव कर्मर वाणी,

भारत सदाय आछिल स्वाधीन आजिओ स्वाधीन आमि ।
पयत्रिश कोटि भारतवासीये विश्व थाकिब जिनि ।
युग अवतार श्रीरामचन्द्र कृष्ण बुद्ध शकरर
जनमदायिनी भारतवर्ष ज्ञानदात्री मानवर ।
भारतर सजीवनी प्रति धूलिकणार माजत,
आछे लेखा महत्वर पुण्य लिपि-बुरजी पातत
अनन्त विज्ञान ज्ञान महानता महिमा बिकाश
अमर आत्मार रश्मि प्रज्ञालोके विश्व परकाश ।
साम्राज्यर सघातत शान्तिहीन राडली पृथिबी ।
हिंसाद्वेष लोकक्षय पापे म्लान युगर सुरभि ।
स्तम्भित जीवन धारा थमकिल जीवनर गति,
साम्राज्य पीडित आत्मा जनगणे मागिले मुकुति ।
कँपिल उत्तराखण्ड 'तथागते' दिले शान्तिवाणी,
जावप्रेम अहिंसार महाधर्म्मे 'पंचशील' दानि ।
साम्राज्य उत्सर्गी दिले मानवर कल्याण ब्रतत,
सत्यप्रेम अहिंसार त्यागमय जीवन पथत
शिकाले महान मन्त्र भारतत नव जीवनर,
बिलाले भ्रातृत्व प्रीति विश्व मैत्री मरु मरतर ।
सेइ मन्त्रे भारत जागिल, महात्मार महिमा प्रकाशि
विश्व चमकिल देखि भारतर अपूर्ब्ब सन्यासी,
महात्मार ध्यान स्वर्ग प्रजातन्त्र भारतवर्षर
मानुहे रचिब युग भारतर नव विधानर ।
मुक्त भारतर प्रजा मुक्त वायु आकाश मण्डल,
प्रजातन्त्र उचवर बरषिछे आशिष मगल ।
हियाइ हियाइ फुल प्रेरणार सुखर कमल ।
बाधाहीन जनस्रोत अभियान उल्लास मुखर,
स्वाधीन जीवन गति शक्तिमान भारत सन्तान ।
नव जीवनत जागे कर्म्ममय बिशाल आह्वान ।

दुचकुत लागे र सृजनर सपोनर रागि ।
प्रतिभार इन्द्रधनु विचित्र बरणे रूपायित
प्राणे प्राणे मुखरित जीवनर मधुर सगीत ।
मृत्यु विभीषिकामय रणोम्मत्त उतला धरात ।
भारतर शान्ति वाणी बरषिछे पुष्प पारिजात ।
भारतर पुण्यभूमि स्वर्गसम पवित्र धूलात
ऐक्यमय महामन्त्रे रामराज्य पातिम धरात ।
विजयिनी भारतर आमि युग बिजयी सन्तान,
नतुन जीवन गीति पृथिवीक आमिये शुनाम ।

आह्वान

उदित मुक्ति की उषा, दमकता पूरब नभ है,
हैं आनन्दमग्न गण-भारत के जनगण सब ।
किरणें नये प्रात की ले आयीं कल्याणी,
मुक्त देश के लिये कर्म की नूतन वाणी ।

हम स्वाधीन रहे, स्वाधीन रहेंगे भी हम,
जगज्जयी पैंतीस करोड पुत्र चिर सक्षम ।
रामकृष्ण की जन्मभूमि है भारत जननी,
बुद्ध और शकर की भी यह जन्मदायिनी ।

है सजीवन सना धूल का कतरा-कतरा,
पावन लिपि में है इतिहास यहाँ का निखरा ।
महिमा और जोत का अक्षय यहाँ कोष था,
अमर आत्मा के प्रकाश से दीप्त लोक था ।

साम्राज्यों की रक्त-तृषा से रजित धरती,
हत्या द्वेष पाप से युग की सुरभि म्लान थी ।
जीवन की धारा हत, जीवन की गति आहत,
लगीं मांगने मुक्ति आत्मायें पीड़ित नत ।

कपिलवस्तु से एक आत्मा अभिनव जागी,
सुख ऐश्वर्य असीम विभव से बना विरागी।
पचशील के महाधर्म की गूंजी वाणी,
सत्य, अहिंसा, विश्व-बन्धुता की कल्याणी।

उसी मन्त्र से फिर गूंजा भारत का आँगन,
त्याग-तपस्या से बापू के जागा जनगण।
चकित रह गया विश्व देख यह नया जागरण,
संन्यासी का ध्यान-स्वर्ग साकार हुआ बन।

कटीं दासता की जंजीरें, मुक्त देश है,
मुक्त वायु, नभ का मंगलमय नया वेश है।
बरस रहा आशीश, महोत्सव पर यह मंगल,
जन-जन के मानस-सर फूले सुख के शतदल।

जीवन बाधाहीन उमगें नयी चपल हैं,
प्रगति पंथ में बढे चरण ये सबल-प्रबल हैं।
नवजीवन में जगे कर्म का नव आवाहन,
विश्व-बधुता की उद्बुद्ध चेतना अनुदिन।

हो स्वप्निल उन्माद आँख में नव सर्जन का,
इद्रधनुष प्रतिमा का हो जगमग सतरगा।
प्राण-प्राण में जीवन का सगीत मुखर हो,
माटी की धरती पर झिलमिल स्वर्ग सुघर हो।

रक्त-स्नान से रणोन्मत्त लथपथ है धरती,
पारिजात-सी शाति-सुधा भारत की झरती।
ऐक्यमंत्र से रामराज्य हम यहां बनायें,
और विश्व को जीवन का मधुगीत सुनायें।

श्री हसकुमार तिवारी

जन्म सन् १९१८ मानभूमि, बगाल। पत्रकारिता के माध्यम से साहित्य मे प्रवेश। 'बिजली', 'किशोर' आदि पत्रों के सपादक तथा कई समाचार-पत्रो से सबद्ध रहे अनेक प्रसिद्ध बेंगला पुस्तको का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत कर चुके है। 'रिमझिम', 'सचयन' और 'अनागत', काव्य-सग्रह प्रकाशित हो चुके है। पता है, मानसरोवर, गया।

दुचकुत लागे र सृजनर सपोनर रागि ।
प्रतिभार इन्द्रधनु बिचित्र बरणे रूपायित
प्राणे प्राणे मुखरित जीवनर मधुर सगीत ।
मृत्यु विभीषिकामय रणोम्मत्त उतला धरात ।
भारतर शान्ति वाणी बरषिछे पुष्प पारिजात ।
भारतर पुण्यभूमि स्वर्गसम पवित्र धूलात
ऐक्यमय महामन्त्रे रामराज्य पातिम धरात ।
विजयिनी भारतर आमि युग बिजयी सन्तान,
नतुन जीवन गीति पृथिबीक आमिये शुनाम ।

आह्वान

उदित मुक्ति की उषा, दमकता पूरब नभ है,
हैं आनन्दमग्न गण-भारत के जनगण सब ।
किरणें नये प्रात की ले आयीं कल्याणी,
मुक्त देश के लिये कर्म की नूतन वाणी ।

हम स्वाधीन रहे, स्वाधीन रहेंगे भी हम,
जगज्जयी पैंतीस करोड पुत्र चिर सक्षम ।
रामकृष्ण की जन्मभूमि है भारत जननी,
बुद्ध और शकर की भी यह जन्मदायिनी ।

है सजीवन सना धूल का कतरा-कतरा,
पावन लिपि में है इतिहास यहाँ का निखरा ।
महिमा और जोत का अक्षय यहाँ कोष था,
अमर आत्मा के प्रकाश से दीप्त लोक था ।

साम्राज्यों की रक्त-तृषा से रजित धरती,
हत्या द्वेष पाप से युग की सुरभि म्लान थी ।
जीवन की धारा हत, जीवन की गति आहत,
लगीं माँगने मुक्ति आत्मायें पीडित नत ।

कपिलवस्तु से एक आत्मा अभिनव जागी,
सुख ऐश्वर्य असीम विभव से बना विरागी।
पचशील के महाधर्म की गूँजी वाणी,
सत्य, अहिंसा, विश्व-बन्धुता की कल्याणी।

उसी मत्र से फिर गूँजा भारत का आँगन,
त्याग-तपस्या से बापू के जागा जनगण।
चकित रह गया विश्व देख यह नया जागरण,
संन्यासी का ध्यान-स्वर्ग साकार हुआ बन।

कटी दासता की जंजीरें, मुक्त देश है,
मुक्त वायु, नभ का मंगलमय नया वेश है।
बरस रहा आशीश, महोत्सव पर यह मंगल,
जन-जन के मानस-सर फूले सुख के शतदल।

जीवन बाधाहीन उमगें नयी चपल हैं,
प्रगति पथ में बढे चरण ये सबल-प्रबल हैं।
नवजीवन में जगे कर्म का नव आवाहन,
विश्व-बधुता की उद्‌बुद्ध चेतना अनुदिन।

हो स्वप्निल उन्माद आंख में नव सर्जन का,
इद्रधनुप प्रतिमा का हो जगमग सतरगा।
प्राण-प्राण में जीवन का संगीत मुखर हो,
माटी की धरती पर झिलमिल स्वर्ग सुघर हो।

रक्त-स्नान से रणोन्मत्त लथपथ है धरती,
पारिजात-सी शाति-सुधा भारत की झरती।
ऐक्यमत्र से रामराज्य हम यहा बनायें,
और विश्व को जीवन का मधुगीत सुनायें।

श्री हंसकुमार तिवारी

जन्म सन् १९१८, मानभूमि, बगाल। पत्रकारिता के माध्यम से साहित्य मे प्रवेश। 'बिजली', 'किशोर' आदि पत्रो के संपादक तथा कई समाचार पत्रो से सबद्ध रहे। अनेक प्रसिद्ध बगला पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत कर चुके है। 'रिमझिम', 'सचयन' और 'अनागत', काव्य-सग्रह प्रकाशित हो चुके है। पता है, मानसरोवर, गया।

उड़िया

कवि डा० मायाधर मानसिंह

रूपान्तरकार . श्री प्रभाकर माचवे
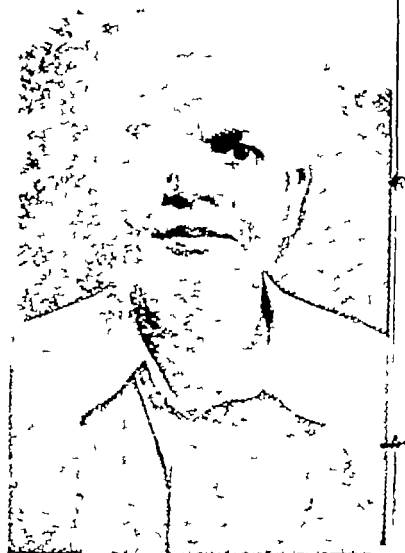
पुरी जिले में पारिकुड में १३ नवम्बर १९०५ को जन्म। पटना विश्वविद्यालय से एम० ए० करके विदेश गए। इग्लैंड में डरहैम यूनिवर्सिटी से 'कालिदास और शेक्सपियर' पर प्रबन्ध लिख कर पी-एच०डी० प्राप्त की। सप्रति सबलपुर के गगाधर मेहेर कालेज के प्रिंसिपल। प्रकाशन धूप, हेमशस्य, जीवन-चिता, बापू तर्पण, जेमा, कोणार्क, अख्यत आदि काव्य, बाराबाटी, पुजारिणी, पुष्पिता, दुर्भिक्ष (पद्य-नाटिकाए), कमलायन (आख्यान-काव्य), शिक्षा, शिक्षक, शिक्षायतन, साहित्य ओ समाज, कवि ओ कविता, बुद्ध (गद्य ग्रथ), नष्ट नीड (नाटक), अन्वेषण (उपन्यास) तथा उड़िया ज्ञानकोश के प्रथम भाग का सपादन। साहित्य अकादेमी के उड़िया सलाहकारी बोर्ड के प्रमुख हैं।

छबिश जानुआरी

जननी भारत,
तो माटिरे गणराज्य पुनरुत्थानर,
स्मारक दिवसे आजि करे नमस्कार।

स्नेहमयी त्रिशकोटि सन्तान जननी,
कल्याण करुणामय तोर पक्षपुटे,

सहस्र वर्षर घोर दुर्दिन सकटे
शत शत आक्रमणु, साम्राज्यर उत्थान पतने
वचाइकि रखिथिलु एइ तोर अरक्ष जातिरे,

गहन अन्तरे

गोपने साइति रखि एहि महास्वप्न
निजपुत्रकन्याकर गणराज्य, स्वराज्य सभोग
हेब दिने पुनर्बार, इतिहास प्रथम दिवसे
तुहि येबे ठिआ कलु आद्ये तोर शान्त गृहस्थालि
हिमाचल पाद तले,

श्रेणीहीन, भयहीन, नरपतिहीन
जीवन सभोगकारी साम्यतन्त्रराज्य
गढ़ि उठिथिला येन्हे एइ तोर आपणा माटिरे ?
आजिर ए नब गणतन्त्रे
जननी स्वरूप तोर बहुयुग परे
स्पष्ट प्रकटित येन्हे स्वाधीन ए देशे,
सात्विक गौरबमय दीर्घ तोर अन्तरर गाथा
आजि मोर प्राणे प्राणे बहे येन्हे काल प्रतिलोमे ।

समयर शत घन प्रस्तर प्राचीर
भेदि एइ स्पष्ट येन्हे शुणिबाकु पाए

कथोपकथन,
महेन्द्र दरीर घाटे सिन्धुनद जले
आसुर वणिक साथे, द्राविड योगीर ।

पुणि कर्णे बाजे
शतद्रु पुलिने आर्य ऋषि बिम्बोष्ठरु
प्रभाते उत्थित सामगान सुगम्भीर

तपोमग्न थिल रहि सेहि दुइ वरपुत्र लागि
मातृ प्रिय, भ्रातृ प्रिय, गुणहृद सम्राट याहाक
त्यागपूत, शुभकर स्वार्थहीन पुन्य परशरे
घटि अछि एइ एक जन्मे,
जन्मान्तर मोह परि कोटि जीवनर
आणि ले आपकु यहु अन्धकारु उन्मुक्त आलोके
मिथ्यारु सत्यरे पुणि मृत्युरु जीवने ?

पुन्यस्पर्शे बापूजीर जड कोटि कोटि
हेले क्षुब्ध प्राणवन्त, नव सचेतन
मानविक अधिकारे ।

बापू जीर पछे,
निर्माता नेहेरू
धीरे करे से विराट जाग्रत गणरे
समृद्ध श्रीमन्त, निज पुरातन भूम,
विश्वजाति मेले पुणि वरेण्य शरेण्य
सम्मानित शत्रु बोलि पर शासनर
ए धरार सकल प्रान्तरे,
वधु श्रेष्ठ, पर पीडितर ।

तोर स्वप्न अनुयायी, तोर प्रिय सतान गठित
येणु एहि भारतर नवगणतन्त्र ।
ताहार स्वाधीन प्रजा, आजिर ए स्मारक दिवसे
प्रेरिवाकु चाहें तार समजने ए धरार सकल देश रे
सेहिनोर वाणी सनातनी
सौहार्द्यर सहावस्थानर ।
आस चीन, आस वर्मा, आस हे निप्पन,
आस युरो-आमेरिका, आस सोभियेट
वुद्ध-गान्धी-पूत एहि अवैर माटिरे
अन्योन्य-वैरता तेजि, महामानवर
ए महामिलन भूमे मिलवन्धु सम ।

जननी भारतवर्ष खोलिछि ता द्वार
शत्रु, मित्र, यिए येबे असि अछि एथि
मानवर इतिहासे शुणाइ प्रथमे
मानवर चारिपाशे देव अधिष्ठान ।

आसे पुणि शान्त क्षुद्र अरण्य कुटीरु
विराट रसाल महा कवितार ध्वनि
पौरुष ओ नारीत्वर महा अभिनय
निखिलजातिर मर्म गभीर काहाणी
रामसीता कृष्णार्जुन द्रौपदीर कथा ।

पुणि शुण, शुण विश्व जने
राजपुत्र फिगिदेइ सकल विलास
मानवर मुक्तिपाइ वरि कृच्छ्र पथ ।
धर्मचक्र-प्रवर्तन मृगदाववने
एइ करे, व्याख्या करि जनतार भाषे
महाधर्म, सत्य, न्याय, प्रज्ञा, करुणार
या कल्याण उर्मि
प्रसारित करिअछि आलोक, सस्कृति
धरणीर देशे देशे, कोटि कोटि जने
देखाइ सरल पन्था महाजीवनर ।
जननी, अतीतपरि तो शत बोइत
पुणि यिब घाटे घाटे सात समुद्रर
पहचाइ देशे देशे सेहि तोर वार्त्ता सनातनी,
जीवन आनन्दमय, जीवन पवित्र
जन्तुर स्वभाव हिंसा, नुहे मनुष्यर
हत्यारु आश्रय बढ, वैररु मित्रता
वर्ण-निर्विशेषे
ईश्वर आसीन प्रति नर हृदयरे
सत्य एक,
भिन्न उच्चरित याहा प्रचारक मुखे ।

सहस्र वर्षर सेहि घोर दुर्दिनरे
तमे किमा आपणार निगूढ अन्तरे
मुक्त हस्ते देइ अछि अकुण्ठ आतिथ्य
पररे करिछि निज विदेशीरे देशी ।
तेणु मु गर्वित याहा धमनीरे मोर
बहे सर्व रक्त धारा ।
श्वेत, कृष्ण, हरिद्रादि सकल चर्मर
द्राविड, अष्ट्रिक, आर्य, मगोल, टिव्वेटे ।
सकलर उपादाने मो देह गठित
विश्वमानवर
गर्वित प्रतीक मुंहि, मुक्त भारतर
साधारण नागरीक
बद्ध परिकर पुणि थापिवाकु लोकमत परे
ग्रामराज्य, गणराज्य, श्रेणीगोष्ठीहीन,
उच्चनीच-लज्जाहीन, शोषण विमुक्त ।
परस्पर हिंसा ईर्षा अविश्वास तेजि
शुण विश्व बन्धुगण, वाणी भारतर--
बधुतार, अहिंसार विश्वकल्याणर ।

छब्बीस जनवरी

भारत जननी ! तेरी मिट्टी में गणराज्य पुनर्वार
स्मारक दिन पर करता हूँ मैं नमस्कार !
स्नेहमयी ! तुम तीस कोटि सन्तानो की हो जननी
कल्याण-करुणामयी ! तेरे पक्षपुट में
सहस्रो वर्षो के दुर्दिन घोर संकट में
शतशत आक्रमणों में, साम्राज्य उत्थान-पतन में
गहन अन्तर में छिपा रखा था क्या यह महास्वप्न
निज पुत्रपुत्रियों का गणराज्य होगा स्वराज्य पुन.

जैसा इतिहास के शुरू में हिमालय के तले
श्रेणीहीन भयहीन भूपहीन साम्यतन्त्र-राज्य
तेरी ही मिट्टी में कभी गढ़ उठा था ।

आज गणतंत्र में पुनः वही गाथा
स्पष्ट प्रकटित है सात्विक स्वाभिमान भरे अन्तर की
समय के शतघन प्रस्तर प्राचीर चीर
सुन पाता स्पष्ट वही संलाप :
महेन्द्र दरीघाट पर सिन्धुनदी के किनारे
आसुर वणिक के सग द्राविड उस योगी का
पुन· सुना आर्यऋषि-श्रोष्ठ से उठा हुआ
शतद्रु-पुलिन पर सामगान सुगभीर ।

मानव-इतिहास में पहले-पहले सुना
मानव के आसपास देवता का अधिष्ठान
पुन. शान्त छोटी-सी वन की कुटिया से उठी
विराट रसाल महाकाव्य-ध्वनि
पौरुष औ नारीत्व के वे महानाट्य
निखिल जाति मर्म भरी कहानियाँ :
राम-सीता-कृष्णार्जुन-द्रौपदी की कथा !

सुनो सुनो विश्वजन, पुन सुनो
राजपुत्र सब विलास तजकर
मानव की मुक्ति के लिए विरक्त बनता
धर्मचक्र-प्रवर्तन मृगदाव वन में
करता है व्याख्या, करता है जनभाषा में !
महाधर्म सत्य, न्याय, प्रज्ञा, करुणा की कल्याणोर्मि
प्रसारित करता है देश देश आलोक-सस्कृति
सरलपंथ महाजीवन का दिखा पथ !

जननी ! अतीत की ही भांति तेरे शत जहाज
पुनः घाट-घाट सात समुद्रो के पार आज
देते हैं सदेश—"जीवन आनन्दमय, जीवन पवित्र है !
हिंसा तो पशु स्वभाव, नहीं है मनुष्य का,

हत्या नहीं, रक्षा बडी, वैर नहीं, मित्रता,
वर्ण-निर्विशेष प्रति-जन में है ईश्वर ।
सत्य एक, प्रचारक मुख से भिन्न उच्चारित ।'

मा ! ये ही तेरे दो वर पुत्र पुन आयें,
इसी प्रार्थना में ये हजारों वर्ष तम के क्या बिताये तूने !
ये जो तुझे 'मृत्योर्मामृतगमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय' ले जायें !
बापू जी के पुण्य स्पर्श से कोटि जड बनें चेतन
प्राणवन्त मानव-अधिकारमय !
बापू जी के बाद, निर्माता नेहरू धीरे से जागृत करता है यह विराटगण
समृद्ध, श्रीमत पुरातन भूमि में,
विश्वशाति फिर से वरेण्य बना !
सब प्रकार के परपीडन बुरे, बधु सारे जन ।

तेरे स्वप्न-अनुयायी ! तेरी प्रिय जनता यह गठित कर,
बना नया भारत का गणतत्र
तेरी स्वाधीन प्रजा, आज इस स्मरण-दिन
चाहती है फैलाना सौहार्द्र, सहास्तित्व,
आओ चीन, आओ बर्मा, आओ हे निप्पौन
आओ युरो अमेरिका, आओ सोवियत जन
बुद्ध-गाधी-पूत इस निर्वैर मिट्टी में
अन्योन्यवैर छोड, महामानवों के इस महामिलन तीर्थ में
आओ मिलो बधु बन ।

भारत जननी ने किये सबके लिए द्वार खुले
शत्रु मित्र बाहर हो, यहा सब एकसार
मुक्तहस्त देती है अकुठातिथ्य वह
पराये को अपना बनाती, विदेशी को देशी ।

इसीलिए गर्वित हूँ, मेरी धमनी में सर्वरक्तधारा बहती है,
श्वेत, श्याम, हरिद्रादि सारे चर्म में है .
द्राविड हो, आस्ट्रिक हो, आर्य-मगोल-भोट
सबके उपादान से है देह गठित विश्व मानव की,
गरबीला मैं प्रतीक स्वाधीन भारत का साधारण नागरिक !

करता हूँ प्रण इस दुनियां में ग्रामराज
बनाऊंगा श्रेणी-गोष्ठीहीन, उच्चनीच-भेदहीन, शोषण-विमुक्त
हिंसा-ईर्षा-अविश्वास-त्यक्त, सुनो विश्व बंधुगण, भारत की वाणी
बंधुता, अहिंसा, विश्वशांति की कल्याणी !

★

श्री प्रभाकर माचवे

जन्म १६१७ में ग्वालियर मे। शिक्षा : आगरा से दर्शन और अँगरेजी मे एम० ए०। माधव कालिज उज्जैन में १ वर्ष तक प्राध्यापक रहे। उसके बाद ६ वर्षों तक आकाश वाणी मे काम किया। आजकल साहित्य अकादेमी के सहायक मंत्री हैं। लिखना सन् १६३४ में शुरू किया। हिन्दी औ मराठी मे समान-रूप से लिखते रहे। अबतक परंतु, एक तारा, द्वाभा, साँचा (उपन्यास) खरगोश के सींग (निबं

उर्दू

कवि · श्री रविश सिद्दीकी
रूपान्तरकार · श्री ओंकारनाथ श्रीवास्तव

नाम शाहिद अजीज अहमद 'रविश'। सिद्दीकी वश के है। जन्म १० जुलाई १६११, जन्मस्थान ज्वालापुर। पिता मौलवी तुफैल अहमद शाहिद भी कवि हैं और उन्हीं से 'रविश साहब ने काव्य-दीक्षा प्राप्त की। क़ुरान मजीद और फारसी की शिक्षा घर पर प्राप्त की, बाद में अंग्रेज़ी और हिन्दी स्वय सीखी। ७ वर्ष की अवस्था से ही कविता करना आरभ किया। गज़ल और नज्म—दोनो ही क्षेत्रो मे आपका ऊँचा स्थान है। उनकी रचनाओ मे अब तक 'कारवा' और 'मेहराब गज़ल'—यह दो पुस्तकें प्रकाशित हुई है।

योमे जमहूर

वक्त की मसीहाई, ले रही है अँगडाई
जह्रे चश्मे खूबा मे।
जिदगी पलट आई, साजे आरजू लेकर
बज़्मे नाजे जाना मे।

रगोबू के ख्वाबो का, कारवाने बेपरवा
हर मुकाम से गुजरा।
खेमाज़न हुआ आखिर बूए आशना पाकर
हिंद के गुलिस्ता मे।
जिंदाबाद परवानो, खूने दिल से रौशन को
तुमने शमये आजादी।
आफरी है दीवानो, लाये तुम बहारो को
दश्त से गुलिस्ता मे।
तोडकर दरे ज़िदा, अम्न के फिरिश्तो को
बालो पर दिए हमने।
रोशनी मिली हमसे, दोस्ती के साहिल को
दुश्मनी के तूफा म।
सोजे दिल की वेदारो, एक दलील रौशन है
सुब्ह कामरानी की।
तीरगी का शिकवा क्या, रात भर की मेहमा है
सायए चिरागा मे।
जिंदगी ने समझा है, राजे जन्नते आदम
दर्दे आश्ना बनकर।
खुल्द जाविदानी की, राहते सिमट आई
आज दर्दे इसा मे।
जिक्रे लाल ओ गुल क्या, खाक मेरे गुलशन की
हासिले वहारा है।
सब अजीज है मुझको, फूल हो कि कॉटे हो
दामने गुलिस्ता मे।
नौ-ब-नौ यह रगीनी, चेहरए गुलफ्शा की
जज्बे शौक है शायद।
हम नशी बता कब थी, खम-ब-खम यह बेताबो
गेसुए परीशा मे।

रस्मो राहे महफिल से, आपको कहा निस्बत
कुछ तो ऐ रविश कहिए ।
किस की जुस्तजू आखिर, आज खीच लाई है
महफिले निगारा में ।

गणतंत्र-दिवस

आज सुन्दर नयनों के हलाहल में युग का अमत-तत्व स्पदित हो उठा है, जीवन नव-आशाओं की वीणा लेकर सौंदर्य की रूप-सभा में पलट आया है ।

रग और सुगध के स्वप्नो का निर्द्वन्द्व कारवाँ हर मजिल को सगर्व ठुकराता हुआ बढ़ा जा रहा था । यकायक मानो अपने सुहृद की सुपरिचित सुवास ने उसे रोक लिया—ठहरो, भारत-उपवन ही तुम्हारा विश्रामस्थल है ।

शहीदों, तुम अमर हो, तुमने पतिगों की भाँति अपनी वलि देकर स्वतन्त्रता की ज्योति जगाई है, तुम धन्य हो, तुम वसत को वनों से खींचकर उपवन में ले आए हो ।

कारागृहों को तोडकर हमने शाति के देवदूतो को पख प्रदान कर दिए हैं, हमारे प्रयत्नो से शत्रुता के तूफानों के अन्धकार में मित्रता के शांत फूल जगमगा उठे हैं ।

हृदय का यह जाग्रत उत्साह हमारी सफलता के आगामी प्रभात का ज्वलत प्रमाण है , उज्ज्वल दीपों की छाया में रेंगते हुए अन्धकार की बात छोडो । नव प्रभात के आते ही वह स्वय ही विलीन हो जायगा ।

आज जीवन ने इस असीम रहस्य को जान लिया है कि मानवता की वेदना में ही धरती का स्वर्ग छिपा हुआ है । देवलोक का समस्त सुख-विलास आज मनुष्य के हृदय का दर्द बन गया है ।

लाला और गुलाब की तो बात ही क्या, आज मेरे उपवन की धूल भी वसत के मस्तक का चन्दन बन गई है, मुझे अपने उपवन का सभी कुछ प्रिय हैं—फूल भी और काँटे भी ।

नव विकसित फूलों की तरह प्रतिपल मुस्कुराता हुआ यह सौंदर्य शायद मेरे ही आकर्षण का रूप है । मित्र ! क्या इससे पहले भी बिखरे हुए बालों के अधीर सौंदर्य का ऐसा स्वप्न किसी ने देखा था ?

शिष्टाचार-प्रदर्शन पर गर्व करती हुई इन सभाओं से तुम्हारा क्या सम्बन्ध ? ऐ 'रविश' ! कुछ तो कहो आज तुम किसको ढूंढते हुए इस सौंदर्य-लोक में आ निकले हो ?

कवि : श्री द रा. बेन्द्रे
रूपान्तरकार : श्री नरेन्द्र शर्मा

धारवाड मे ३१ जनवरी १८९६ में जन्म। बबई से एम० ए०। धारवाड के राष्ट्रीय विद्यालय के सस्थापक। 'स्वधर्म्', 'जय कर्नाटक' और 'जीवन' के सपादक। 'गेलेयर गम्पु' (मित्र-गोष्ठी) के सदस्य। १९३२-३३ में जेल-यात्रा; '३२से '४० तक ब्रिटिश नौकरी से वचित। १९४८ के वाद मराठी मे भी लिखने लगे। १९३० (मैसूर) में तथा १९३५ (बबई) में काव्य-विभाग के अध्यक्ष तथा शिमोगा के कर्नाटक साहित्य सम्मेलन के सभापति। १९५५ मे 'होस ससार' नाटक पर प्रथम पुरस्कार। आठ कविता-सग्रह, दो एकाकी सग्रह, पाच समालोचना के ग्रन्थ, तथा प्रो० रानडे के 'उपनिषदों के रचनात्मक सर्वेक्षण' तथा अरविन्द के 'भारत मे पुनर्जागरण' के अनुवाद के प्रणेता। पता : नीलनगर, शोलापुर। साहित्य अकादेमी के कन्नड सलाहकार बोर्ड के सदस्य हैं।

★

नूतन चेतना

पुरातनऊ चिरनूतन ।
भारत मातेय चेतन ।।पुरा०।।

असुररिंदा भूभारवागे । सम
हारभाव सञ्चारगोडु । नव
धर्मवन्नू सुस्थिरवगो लिफ्के । अव
तार बागि श्रीरामकृष्ण रोलू ।।

इलेयोलगिलि दद्दु ।
मूर्तिया इदु निर्भीतन ।
भारत मातेय चेतन ।
पुरातनवु नवनूतन ।।

हिमसेइद कत्तिरिस प्राण । का
रुण्य वर्ष अनवरत दान । वेने
वर्धमानविदु महावीर । रोलु
लोकाग्रते येरिद्दु मत्ते ।। तावे

सत्यपथव हिडिददु तानु । दी
नरिगेदुडीदु मडिदिद्दु कूड । त
तश्नवरिंदेदे गुडिगेसिडि । दू
राम नाम ज़वि सुत्तालहिम ।। सेयू
करुनेगे मडिदिद्दु ।

भारत भाग्य विधातन ।
भारत मातेय चेतन ।
भव्यवु दिव्यवु नूतन ।।

सहस्रविन्दाक्षरदल्लि । प्र
त्यक्ष विद्दु विज्ञान दीक्षे । पडे
दिद्दु ईक्षणकु मौन मुद्रे । यलि
सतत कृपेयलि समाधितवु ।। ता
माडदे इदे सद्दु ।

हृदय पुरुष सजातन।
भारत मातेय चेतन।
पुरातन वे चिर नूतन॥

शास्त्र शम्त्र सम्पन्न भुवन। वा
शिवन मरेतु यमभवनदते। भण
गुद्दतिरलु सारुत्त बन्तु। सह
जीवन मत्रव पठिसुत्तता॥ दा
रिद्र्यदि मुलु गिद्दु।

जितन ओडनये चेतन।
ओलि सुवडे नव नूतन।
भारत मातये चेतन॥

लोकवा गिद्दद्दु।
निलिसितु शातिय केचन।
भारत मातये चेतन।
चिरतन वु चिर नूतन॥

कनसु कड्डु कग्गेट्टु कुरुडि। नला
हुरुडिनिंद नाडेदिरलु जगवु। ता
सुप्तित्वरद प्रज्ञप्ति यागि। निज
साक्षीयन्ते ताटस्तया दल्ले॥ घन

बुद्ध रोलेद्दद्दु।
शून्य दाचे सम्भूतन।
भारत मातेय चेतन।
पुराणवेन्दरु नूतन॥

नूतन चेतना

भारत का चैतन्य तत्व प्राचीन, किन्तु नित नूतन !
हिंसा के उत्पातो से जब भूमि-भार बढ जाता,
आते तब सहार-भाव ले असुरारी भव-त्राता,
भारत की निर्भीक चेतना राम-कृष्ण-सकर्षण।

हिंसा के हाथो उत्पीडन बढा, प्राण घबराए,
वर्धमान करुणाघन बन कर महावीर तब आए,
मैत्री के ध्वज में फहराया फिर भारत का चेतन !
स्वप्न सृष्टि को सत्य मान, अभिमान बढ़ा जाता था,
अहबुद्धि को देह गेह की निद्रा से नाता था,
हुआ दीप्त तब महाबोधि से महाशून्य का आसन !
रक्त-स्वेद-सिंचित-सत्याग्रह-पथ पर बढ़े निरन्तर,
सह हिंसा की घात, अहिंसा-मत्र विश्व को देकर,
कर चेतन को प्रकट, गए कर आत्मोत्सर्ग महात्मन् ।
शस्त्र-शास्त्र-सपन्न विश्व ने है शिव को बिसराया,
शस्य-श्यामला वसुधरा पर आज मृत्यु की छाया,
पर विपन्न यह देश कर रहा विश्व-शान्ति-सवर्द्धन ।
दश दिशि में शत शत दल खोले है अरविन्द सुशोभित,
समाधिस्थ विज्ञान, नयन ध्यानस्थ, मौन में लय नित,
कोलाहलमय विश्व करेगा कल जिसका आवाहन !

★

श्री नरेन्द्र शर्मा

जन्म सन् १९१३, जहाँगीरपुर, ज़िला बुलदशहर, उत्तर प्रदेश। शिक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय से एम० ए०। सन् १९३७ में 'भारत' के सह-सम्पादक के रूप में कार्य किया। सन् १९३८ से ४० तक अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के कार्यालय से सबद्ध रहे। सत्याग्रह-युद्ध में सन् १९४०-४२ में कारावास गये। सन् १९४३ से १९५३ तक बबई में फिल्मों में गीत तथा सवादलेखन किया। आजकल आकाशवाणी दिल्ली के प्रसार-सगीत का निर्देशन कर रहे हैं। काव्यसग्रह प्रभातफेरी, प्रवासी के गीत, पलाशवन, कामिनी, मिट्टी और फूल, हसमाला, रक्तचदन, अग्निशस्य और कदलीवन। कहानी-सग्रह कडवी मीठी बातें प्रकाशित हो चुके हैं।

कवि : श्री रहमान राही

रूपान्तरकार : डा० हरिवंशराय बच्चन

श्रीनगर मे ६ मई, १६२५ को जन्म। १६५१ में जम्मू-कश्मीर विश्वविद्यालय से फारसी में एम० ए० किया। इस समय वहीं फारसी तथा उर्दू के अध्यापक हैं। 'सनव्यिन साज', 'सुभुक सौदा' तथा 'यिमसान आलव' कश्मीरी पुस्तकों के रचयिता। कश्मीर की कल्चरल कान्फ्रेंस द्वारा प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका 'कागपोश' के सपादक। आपके अधिकाश गीत कश्मीर की जनता तथा लोकतत्र के पक्ष मे किए गए प्रयास के सबंध में हैं।

मगर व्यथ मा छः शोन्गिथ

च़ कव छक शाम लोट अखताव लूसिथ वोश हैवान त्रावुनि।
मे वुनमै वारहा सुबहस छ़ थनु प्योन ज़िदगी प्रावनि।
च छी वुनि चिथर डीशिथ मर्द भागृकि दाग वै पावान।
म्य छुम सोतुक खयालइ हावसन हुन्द बाग फोल रावान।

म वनतम ज़िदगी छा पेन्जि कुनि प्यठ जाह् करार आमुत ।
च प्रिछ आरन कोलन जाह् मज़िलन मा छु शुमार आमुत ।
च है पाने वुछुत मज़लिक गबर मा मज़िलिनइ रोज़ान ।
छु मोसुम पाज़ फरिसई तल वुफान शेछ सगरन सोजान ।
छी कात्याह कैद हेमतस काम ह्यथ अज़ व्रेडि फुटरावान ।
बेकस रातिक छि अज़ याशा करान शाहन पथर पावान ।
यि असि यव चव वोनि मा है कि काह सु जुलमुक जहर असि चाविथ ।
दो है मा युदि हेकन सान्यन इरादन मूल अलराविथ ।
खबर छम वुनि छि केह् बदखाह यछान लोलस थवुन पाबद ।
छु ट्योठ बासान केचन जाहिलन सान्यन कथन हुन्द कन्द ।
खबर छम जिदगी छुन चानि हुसनुक रग वुनि आमुन ।
छि शोकस वुनि स्यठाह ठरि वारु छुन लजि बामुनाह द्रामुन ।
मगर व्यथ मा छे शोगित वख छु असि सीत्यन दवान दौरान ।
सगर मालन छि वुठ गुमनान न गठ कारस छु सथ सोरान ।
बो ग्यब दोह्दिश गजल हुसनुकि वुनि छे लोलस नजर थावुनि ।
च कव छख शामलाट अखता बलूसिथ वोश हेवान आवुनि ।

सोता है संसार नहीं

अधकार को देख रक्त के आँसू व्यर्थ बहाता है,
फिर कहता हूँ सब तम कटता जब कि सवेरा आता है,
ओ बहार तूने तुषार का ओढ कफन क्यों रक्खा है ?
मेरे दृग का स्वप्न वसन्ती दृश्य नए दिखलाता है,
फिर करती शृगार मही,
सोता है ससार नहीं ।

जीवन की गति रोके, सागर नापे, किसमें क्षमता है,
मीलो के पत्थर थक जाते, किन्तु रास्ता रमता है,
नई जवानी के कधों पर डैने उगते नए नए,
बाज नीड से उडता है तो चोटी पर ही थमता है,
गति रखती मँझधार नहीं,
सोता है ससार नहीं ।

ताकत वाले आज हाथ की हथकड़ियां तड़काते हैं,
कल के निर्बल आज सबल शाहों के तख़्त हिलाते हैं;
किसकी हिम्मत आज पिलाए ज़हर पिया जो कल हमने,
हम दीवारें हैं जिनको सैलाब सलाम बजाते हैं;
छूती हमको धार नहीं,
सोता है ससार नहीं।

ज़ंजीरों में बाँध मुहब्बत को मत रक्खो नादानो,
भाईचारे में जो मीठापन है उसको पहचानो,
अभी ज़िन्दगी की पखुरिया अगनित खुलने वाली हैं,
खिलने को हैं फूल अभी बहुतेरे, इसको सच मानो;
बीती अभी बहार नहीं,
सोता है ससार नहीं।

जग सोता है नहीं, हमारे साथ समय की धारा है,
मुसकाती है सुबह, अँधेरे का होता निबटारा है,
मै सुन्दरता के क़दमो में गीत बिछाता जाऊँगा,
सुनो, प्यार से कितने मैंने तुमको आज पुकारा है;
डरने की दरकार नहीं,
सोता है ससार नहीं।

★

डा० हरिवशराय बच्चन

जन्म १९०७ में, इलाहाबाद मे हुआ। प्रारम्भिक सघर्षपूर्ण जीवन झेलकर विश्वविद्यालय की उच्च शिक्षा प्राप्त की, फिर लगभग दस वर्ष तक प्रयाग विश्वविद्यालय के अग्रेजी विभाग में अध्यापन-कार्य किया। इसी बीच इग्लैंड जाकर कैम्ब्रिज की पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। स्वल्प काल के लिए आकाशवाणी मे हिन्दी निर्देशक रहे। आजकल विदेशकार्य-मत्रालय मे विशेष अधिकारी हैं। मधुशाला द्वारा सर्वप्रथम लोकप्रियता मिली। उसके बाद मधुबाला, मधुकलश, निशा-निमत्रण, एकात सगीत, आकुल अतर, सतरगिनी, मिलन-यामिनी, बगाल का काल, खादी के फूल, सूत की माला आदि कविता-पुस्तकें प्रकाशित हुई। नया सग्रह 'प्रणय-पत्रिका' अभी प्रकाशित हुआ है। पता: विदेशकार्य मत्रालय, केन्द्रीय सचिवालय, नई दिल्ली।

गुजराती

कवि . श्री उमाशंकर जोशी

रूपान्तरकार . श्री नरेन्द्र शर्मा

बामना, साबरकांठा (उत्तर गुजरात) में २१ जुलाई १९११ मे जन्म। १९३८ मे एम० ए०। विद्यार्थी-जीवन मे असहयोग आंदोलन मे भाग लिया। १९३० से ३४ के बीच दो बार जेल यात्रा। १९ ७ से १९४६ तक शिक्षक तथा प्राध्यापक रहे। १९४७ से 'संस्कृति' पत्रिका के संस्थापक सम्पादक। १९५४ मे 'गुजराती भाषा भवन' के प्रमुख। १९३९ मे 'निशीथ' पर रणजीतराम सुवर्णपदक मिला १९४५ मे महिद पारितोषिक तथा १९५३ मे नर्मद सुवर्ण-पदक 'प्राचीना' पर मिला। प्रकाशन विश्वशांति (१९३१) गंगोत्री, निशीथ, आतिथ्य, वसंतवर्षा आदि काव्यसंग्रह सापना भारा (ग्यारह एकांकी), श्रावणी मेलो (कहानियाँ), अखो—एक अध्ययन (आलोचना), प्राचीना (सात संवाद काव्य) पुराणो मा गुजरात (शोध), गुले पोलान्ड-मिस्कियेविच के क्रीमियन सॉनेटो का अनुवाद (१९३९), उत्तररामचरित तथा शाकुन्तल के समश्लोकी अनुवाद। पता 'संस्कृति', अहमदाबाद–९। साहित्य अकादेमी के गुजराती सलाहकार बोर्ड के प्रमुख तथा कार्यकारिणी बोर्ड के सदस्य।

विश्वशांति

त्यां दूरथी मगल शब्द आवतो
शताब्दिओनां चिरशान्त घुम्मटो
गजावतो चेतनमत्र आवतो ।

प्रकाशना धोध अमोघ झोलती,
धपे धरा नित्य प्रवासपथे
झूमो रही पाछल अधकारनी
टृटो पडे भेखड अर्ध अगे ।

विराट खोली निज तेज आंख
कल्याणनो मगल पथ दाखवे
अे तेज पीने निज सृष्टि खीलनी,
जोती घडी अे वधतो उमगे ।

अगे लगाव्या हिमलेप शीला,
ज्वालामुखी किन्तु उरे ज्वलत,
मैयातणे अन्तर शुं हशे पीडा ?
के सृष्टिचिंता उरमा अनन्त ?

विश्राम काजे विरमे नही जरा,
अकथ्य दु खे अकलाय हैडे
उच्छ्वासथी वादलगोट ऊडे
ने दूर फेले जलनील अचला ।

भमे भमे दु खतपी वसुधरा,
डगो भरे तेजपथे अधीरा
अे तोय पूरा न थया प्रकाश,
अधारमा आथडी भूतसृष्टि
आ रक्तरगी पशुपखी प्राणी
पुकारता सौ नखदत नाश ।

ने लोही पीने उछरेल घेलो
आ लाडिली मानवता घरानी
इतिहासनो भूलभुलामणीओ
रचे, अने कँइ जगवे लडाइओ।

भोलो स्वहस्ते निज अग चीरे
ने भीजतो आत्मतणा रुधिरे
जल्या करे चोदिश कोटि क्लेश
शमे न ओ आग अबूझ लेश
को सिंचता जीवनवारि सत
तोये रहे पावक ओ धगत
पेगाम दैवी पयगम्बरो वद्या
शमी न ओ भोषण विश्ववेदना,
त्या दूरथी मगल शब्द आवतो
युगोतणी कैंक पडी कतार
आवे ध्वनि ओहनी आरपार
तु पाप साथे नव पापो मारतो।
ओ मत्र झील्यो जगने किनारे
ऊभेल योगी पुरुषे अनके,
आरण्यकोओ ऋषिमडलोओ,
सुणेल बुद्धे इशुओ महावीरे,
न तो य निद्राजड लोक जाग्या
डूबी गयो मत्र अनततामा।
अ आज पाछो ध्वनि स्पष्ट गाजतो
आ युद्धथाकया जगने किनारे
गाधीतणे कान पड्यो उरे सर्यो,
ने त्या थकी विश्व विशाल विस्तर्यो
युगो युगोनी तपसाधना फली
जरी महा अन्तरवेदना शमी।

विश्व-शान्ति

वह दूरागत, मंगल-शब्दों की ध्वनि आती,
शताब्दियो के गुम्बद की चिर शांति गुँजाती।

कर अजस्र धारा प्रकाश की आत्मसात् नित
धरा धा रही है प्रवास के पथ पर अविजित।
अंधकार के ढूह ढह रहे हैं कगार-से,
पर न रुकी है प्रगति-धार, तम के प्रहार से!
खुले हुए हैं तेजोमय लोचन विराट के,
दिखें मोड जिससे मंगल-कल्याण-वाट के।

तेज-वृष्टि कर पान, सृष्टि हो रही प्रफुल्लित,
देख रही है धरती माता, सुख से प्रमुदित!
शोभित है मां, अंगों पर हिम-लेप लगाए,
अन्तराल में ज्वाला जी की ज्योति जगाए।
क्या जाने मां के मन में क्या पीर समाई?
चिन्ता में है निहित, सृष्टि की सतत भलाई!

है अविराम अथक श्रम अविरत, अकथ पीर है।
किस दुख की अकुलाहट से अंतर अधीर है!
उच्छ्वासो में मँडलाते बादल-दल-मंडल,
अति गति से फहराता पीछे चल जल-अंचल।
भ्रमती है, भ्रमती है, दुख से तपती धरती,
बढ़ती है प्रकाश-पथ पर डग पर डग भरती!
फिर भी भूतल पर प्रकाश पर्याप्त नहीं है!
क्या डगमग-पग भूत-सृष्टि तम-व्याप्त नहीं है?

रक्त-रँगे नख-दंत और पशु-पक्षी-प्राणी!
पली रक्त पर, मत्त मनुज की जाति सयानी!
इतिहासो की भूलभुलइया रचती आती,
युद्ध ठान कर, युग युग वैर-वह्नि सुलगाती!
अपने अंग चीरती है अपने ही कर से,
रक्त-स्नात अपने ही लोहू के निर्झर से!
कोटि क्लेश की अबुझ आग जलती ही जाती,
संत वचन बरसे, पर शीतल हुई न छाती!

देवदूत आए, लाए सदेश चेतना,
पर न बुझी ज्वालामय भीषण विश्व-वेदना !

पर दूरागत मगल-शब्दों की ध्वनि आती,
युग-युग की प्राचीर चीर, सदेश सुनाती—
हनन पापियो का, न करेगा शमन पाप का,
हिंसा से होगा न निवारण विश्व-ताप का।
वह दूरागत, मगल शब्दो की ध्वनि आती,
शताब्दियों के गुबद की चिर शाति गुजाती !

यही मंत्र था, जिसे योगियों ने अपनाया,
क्षितिज-छोर पर खड़े आर्य ऋषियों ने पाया,
महावीर ने और बुद्ध ने सुना, सुनाया।
मन्त्र गया, निद्रालस जग की गई न माया !

पर दूरागत मगल-शब्दों की ध्वनि आती,
शोणित-नद के तम-पकिल तट से टकराती।

गाधी के मन-प्राणो में ध्वनि आन समाई !
निखिल विश्व के प्लावन को गगा बन धाई !
वह दूरागत मगल-शब्दों की ध्वनि आती,
शताब्दियों के गुंबद की चिर-शांति गुंजाती !

पुण्य उदय हो रहे युगों के, सुफल साधना !
हुई अकुरित विश्वशांति की पुण्य-कामना !

कवि . श्री सुब्रह्मण्य योगी

रूपान्तरकार : श्री सुमित्रानदन पत

१९०४ में शकगिरि, सेलम, मे, एक सुविख्यात कवि-घराने मे जन्म। आपकी एक प्रसिद्ध काव्यकृति है 'अहल्या', जिसमे विषय का एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत है। कविताओ का एक सग्रह 'तमिल कुनरी' प्रकाशित हुआ है। साहित्य पर आपने अनेक विचारपूर्ण प्रबन्ध प्रस्तुत किए हैं। आपकी प्रतिभा बहुमुखी है। आपने कई फिल्मो के लिए गीत और सवाद लिखे हैं। उमर खय्याम की रुबाइयो का आपने तमिल मे सुन्दर अनुवाद किया है।

वेल्क कालि

अुलकमेन्नुम् अुडलिनुक्कोरुयिराय् निन्ड़ाल्
अुणमैतनक्कुरैविडमायुलकै वेन्ड़ाल्
अुलकिनुच्चिमलै भ्रिमयच्चिकरम् पूण्डाल्
अुलवुपल नदिकलिन् मुत्तारम् आण्डाल्

अिलकु विन्द्यमामलै उड्याएम् चुट्रि
अेलुन्तोडु मेलैमलै च्चेड्कोल् पट्रि
निलविय मुप्पुरमुम् कडल्पणिय प्पार्त्तल्
नित्य कन्नि भारतत्ताय् कलि कोण्डार्त्तल्

मुन्न मुन्नम् निनैवदन् मुन्नमे
मुन्नुड्कोडि प्पल्लायिरमाण्डुकल्
मुन्नमेन्रू पलञ्चेय्ति तेडुवार्
मुडिवु कूरिड क्कूशिडुमुन्नमे
मुन्नमेन्रिडिल् मानिडच्चादिदान्
मुन्नि नाकरिकम् पेरू मुन्नमे
मुन्नमेयतन् मुन्नमे मुन्नमे
मुदन् मुदल् मक्कल् तोन्रियकालत्ते

आतिनालिनिर् पेरिरूलकेङ्गणुम्
अडर्न्त कारिरूट् कड्गुलिल् वाल्न्त नाल्
जोति जानक्कदिरवन् कीलितशै
तोन्रिप्पारतनाट्टिल् ओलिर्न्तनन्
वोतितोरूम् चेलुमरै क्कीतमाम्
वोडुतोरूम् निरैचेलव क्कूडमाम्
मादरारकल् अमैतियिन् वीरमाम्
मान्दर् तेल्लिय चिन्तैयिन धीरमाम्
रामन् काट्टिय चेन्नेरित्तूय्मैयार्
राजनीति मनुमुरै कण्डवर्
वोमन् तन्द विरल् कोलुम् नेञ्चिनार्
विजयन् नन्दिडुम् विल्लोलि त्तिण्मैयार्
कामन् तन्द कविनुरू मेनियार्
कादल् तन्दिडुम् करपोलि क्कन्नियार्
सामगान च्चङ्गीत क्कडलिनार्
चावुमाडल कोलुम् तिरल् मेविनार्

कण्णनरल् गीतैनेरि कण्डतिन्द नाडु
करुएंयुरुवाम् वृद्धर् अन्बु कण्ड नाडु
पण्णिलुयर् कालिदासन् पुकलुम् भूमि
पाविलुयरवान्कम्बन् कावियड् कोल भूमि
तिण्णमुरु वल्लुवरिन् चेम्मैयुरुम् देशम्
सीतं कण्णगि यौवै देविकलिन् देशम्
वण्णमिकुवानमुत वाल्वु तनै मुनिवर
मण्णिले कण्डुकलि कोण्ड तिरुनाडु

येन्नाट्टुम मुन्नाटटुम पोन्नाट्टिन् मेलाम्
येकिल् नाट्टुमिचैनाट्टु मेट्रमेलाम् नाट्टुम्
अिन्नाट्टिन वलङ्कण्डुमे नाट्टार् वन्तार्
अेमाट्रि वचै नाट्टि अेमैयाट्टम् कोण्डार्

मालैक्कड् गुलिन् नाट्टिनर् काट्टिय
मायजालमयक्किल् मयङ्गिये
कालैप्पेरोलिक्काट्चि मरन्दुमे
कारिरुट्टिलडिमै कलाकिनोम्
पालेक्कानल् वलञ्चेय त्तोन्रिये
पारन्द जीव नदियेङ्गल् गान्धियिन्
चीलड् कूट्टि विड्तल पेट्रनम्
चेम्मैयाड कुडियाट्चि वकुत्तनम्
तन्दै चेल्वम् पिल्ल काक्कुम् तन्मैपोल गान्धियार्
तन्द चेल्वम् पाडुपट्टु कात्तिडल् नम् कडमैये
अिनि भेन्नालुमडिमै वाल्विङ्गेय्तिडातवण्णमे
पणिपुरिन्दु पाडुपट्टु भारतत्तै काप्पमे
नेजिलेन्रूम् पञ्चशीलम् नेरियिलेन्रूम् तूयमैये
वञ्चकङ्गल तुञ्चवाल्विन् माट्चिकाणल् वायमै
अेट्टुतिक्कुम् वट्रिकोट्ट अेड् गुमिम्बम् पोङ्गवे
तिट्टमिट्ट चेयल्पुरिन्तु चीर्तिकाणवम्मिने

मक्कलाट्चि मक्कल यारूम् मन्नरिन्द नाट्टिले
मक्कल माट्चि पेट्रू वालमक्कल् यारूम् वम्मिने

तिट्टम्काण लरचियल् चेयलिर्काणल् मक्कले
चट्टम् काण लरचियल् शान्तम् काणल् मक्कले

नीतिकाण्बदरचियल् पुतुमै काणल् मक्कले
पोतम् काण्बदरचियल् पुतुमै काणल् मक्कल

निदि कोड्डुत्तुम् मति कोड्डुत्तुम् गति कोड्डुत्तुम् आट्चिये
विदिवकुत्त वलि चेलित्त विलैवुकाण वम्मिने

वील्ह वील्ह मिडिमैयावुम् वील्ह वील्ह वील्हवे
वाल्ह वाल्ह कुडिमैयाट्चि वाल्ह वाल्ह वाल्वे

भारत माता

है देह विश्व! आत्मा है भारत माता!

यह सत्य-धर्म धारिणी धरा अति पावन,
सब जग को लगती मनोहरा मन भावन,
विधि नदियों की मुक्तामाला पहनाता!

कटि में करधनी सुशोभित है विंध्याचल
सह्याद्रि-माल का राजदंड है कर-तल,
श्रीचरण चूमता, विनत सिन्धु लहराता!

था वह अनादि-सा आदि, भाव की ऊषा,
भव को न मिली थी जब संस्कृति की भूषा,
तब उदित हुआ रवि यहां स्वर्ण बिखराता!

वन ग्राम, नगर में गूंजीं वेद-ऋचाएं,
हर गृह में दमकीं श्री की दीपशिखाएं,
धृति नारि, धर्म से था पुरुषों का नाता!

हम भ्रमित हुए, अस्ताचल वाले देशों को जब देखा;
अरुणाचल की छवि बनी नयन में धुंधली कचनरेखा;
तब आया ज्योति-पुरुष बापू, चेतन का सूर्य उगाता !

है राष्ट्रपिता ने सौंपी हमें धरोहर,
अब यह स्वतन्त्रता रहे हमारी होकर;
तुम राष्ट्र-धर्म के और मम के ज्ञाता।

श्रम और प्रेम का सबल; शक्ति हमारी !
अपने भविष्य में अविचल भक्ति हमारी !
यह देश मुक्ति के गीत रहेगा गाता !

हो पंचशील प्रतिध्वनित हमारे मन में,
अब सद्विचार, सत्कर्म बने जीवन में,
सकल्पसूर्य से विघ्न-तिमिर छँट जाता !

दश दिशि गूंजा जय-घोष, हृदय हर्षाए।
सहयोग सफल हो, जीवन मगल गाए।
सयोजन ही जग-जीवन पर जय पाता।

यह लोक-राज्य आलोक-राज्य, जन राजा !
श्रम सीकर का मणि मुकुट माथ पर साजा !
जा ! विदा, दैन्य ! मैं गीत विजय के गाता !

प्रत्येक द्वार पर पहुँच सकें मेरे दो पग पथ-चारी;
प्रति द्वार और प्रति हृदय खुले, जा पहुँचे जहा बिहारी !
दू स्नेह-सुधा, लू विदा और चल दू मैं अपने पथ पर,
आकाक्षा का आकाश, भाव आरूढ़ हस के रथ पर !

वह दिन न रहे अब, किन्तु वही कल्पना कामना मन में,
मैं देख रहा हू पुण्य-देश भारत रत सहजीवन में !
श्रम-साध्य स्वेद की दिव्य धार बन कर गगा बहती है,
गोदावरि की हर लहर ज्ञान की गाथाए कहती है !
मै देख रहा हू, तुग हिमालय शृगो पर पग धर कर,
कन्यान्तरीप दूरस्थ, शख वाणी का अधरों पर धर !

मेरे स्वर में विरहाकुल प्रेमी-जन के प्रति सवेदन,
मेरे गीतों की मगल-ध्वनि में सबके हित सुख-वर्षण !
है वर्ण वर्ण मणि-दीप, छद मणि-माला की दीपाली,
मानव के मानस में न रहेगी अब मावस अधियाली !
मैत्री के शान्तिसुधारस से मै सींचूँगा मरु-प्रान्तर,
मन जिनका पत्थर से कठोर, कर दूँगा उन्हें सुधाधर !
मै द्वेष-घृणा के तीरो पर बाँधूँगा सेतु प्रीत का,
निर्भीक खड़ा फहराऊँगा मै उस पर केतु गीत का !

मेरे गीतों में उसी वेणुधर की होगी मधुवाणी,
जिसकी वाणी से निकली थी जीवन-जमुना कल्याणी !
जन आज जनार्दन बना, मृत्तिका पाचजन्य बन जागी !
था जो पाँवो की धूल, बना चदन उसका अनुरागी !
जय घोष कर रहा मनुज, हुआ अब दसों दिशा उजियाला,
मणि-मुकुट शीश पर शोभित है, उर पर शोभित जयमाला !
अब कौन किसी का दास, मुक्त मानव-समाज के सब जन,
सब के ललाट पर खुला हुआ है वह्नि-नयन रिपुसूदन !
पर जन-जन के मन में असीम अब क्षीर-सिंधु लहराता,
जन ही जीवन का निर्माता, जन अपना भाग्य-विधाता !
जन अपनी जीवन नय्या का निर्यामक, अपना नेता
अपने श्रम के मीठे फल का अधिकारी, जीवन जेता !

ंजाबी

कवयित्री :

श्रीमती अमृता प्रीतम

रूपातरकार :

डा० हरिवशराय बच्चन

गुजरानवाला (पश्चिमी पजाब) मे ३१ अगस्त १९१९ में जन्म। देश के विभाजन के बाद से दिल्ली के आकाशवाणी केन्द्र से संबद्ध। प्रकाशन : तेरह कविता-सग्रह, तीन कविता-सकलन; तीन बड़े और एक छोटा उपन्यास, दो कहानी-सग्रह, एक जीवनी, एक लोकगीत-सग्रह; पजाबी साहित्य के विकास पर एक पुस्तक, हिंदी से पजाबी मे अनूदित एक उपन्यास। पजाबी की लोकप्रिय कवयित्री। पता : ८।२० वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी के पजाबी सलाहकार बोर्ड की प्रमुख।

★

नवीं सवेर

धरती पासा परतिया, धरती दी एह बात।
सरघी सुक्खाँ भरी वे, अज जशना वाली रात।
धरती अगण मौकला, लोक बडा परवार,
भारत पीह्डा रागला, अगण दे विचकार।
चौदा अग सहेलिया, उच्चे पीह्डे बेहिण,
कक्खी भाह छुपाइए, लाटा बल बल पैण।
हरफ सुनहरी इन्हा दे, अमन, अहिंसा, त्याग
मसिया वाली रात विच, जग दे जिवें चिराग।
चश्मे वाकर फुट्टदी, इलम हुनरदी ताघ,
सभ्यता ते सस्कृति, चमके सूरज वाग।
नदीआ जीकण सत्तसुरा, धरतो जिऊ कोई गीत,
भर भर वडे चानणा, एह पूर्ब दी रोत।
समा सुनावे बैठ के, एह धरती दी बात,
भारत उते पई सी, सौ साला दी रात।
परी सुततरता दी सुत्ती पलडे तान,
पध चीर के पडचिआ, लोकराज इक ज्वान।
लोकराज शहज़ादडा ज्यो ही छोहे अग,
टुट्टे जादू टूनडे, जागपई ओहदी मग।
करन बहारा चौरिया, चानण धोवे पैर,
लोकराज दे बुत्त दी, धरती मगे खैर।
सरघी वेला वेखदा, नवें जुग्गाँ दा मुक्ख,
जीवे फेर मनुक्खता, जीवे फेर मनुक्ख।
आखाँ पूरब देस नू चानण नवाँ खलेर,
जोवन कर जाए चानणा, एह जु नवी सवेर।

नया सबेरा

धरती करवट ले उठी, धरती की यह बात
आज सुखों का प्रात है, औ जश्नों की रात।
धरती का आँगन बड़ा, बड़ा लोक परिवार,
उसमें रंजित पीठिका, भारत है साकार।
चौदह अंग सहेलिया, उच्च पीठिकासीन,
जिनकी कुंतल-ज्योति को कर न सके तृण क्षीण।
स्वर्णाक्षर में लिख रही, 'अमन', 'अहिंसा', 'त्याग',
जैसे काली रात में जगमग जगे चिराग़।
झरना बन फूटी यहां, ज्ञान कला की प्यास,
संस्कृति एवं सभ्यता का रवि-तुल्य प्रकाश।
नदियां इसकी सप्त स्वर, धरती इसका गीत,
ज्योति लुटाना खोल दिल यह पूरब की रीति।
समय सुनाता बैठकर धरती की यह बात,
भारत पर थी छा गई सौ बरसों की रात।
स्वतत्रता की थी परी सोती चादर तान,
पथ चीर पहुँचा वहां लोकराज बलवान।
उस कुमारवर ने छुए ज्योंही उसके अंग,
जगी परी वह कर सभी जादू टोने भंग।
झलती चँवर बहार है, धोता चंदा पैर,
लोकराज के मूर्ति की भूमि चाहती खैर।
आज सवेरा ला रहा नवयुग नवल विहान,
जागे फिर इंसानियत, जागे फिर इसान।
कहती पूरब देश से, ज्योति नई विस्तार,
जिससे फिर जीवन जगे, करे नया शृंगार।

बगला

कवि :
श्री बुद्धदेव वसु
रूपान्तरकार :
श्री हसकुमार तिवारी

कोमिल्ला (पूर्व बगाल) मे ३० नवम्बर १९०८ मे जन्म। अगरेज़ी मे एम० ए० तक ढाका मे शिक्षा। कलकत्ते मे तथा अमरीका मे अंगरेज़ी साहित्य के अध्यापक। दिल्ली और मैसूर मे प्रौढ शिक्षा पर यूनेस्को विचारगोष्ठी के परामर्शदाता। बगला मे गत बीस वर्षों से नियमित रूप से प्रकाशित 'कविता' पत्रिका के सस्थापक-सपादक। निखिल-बग साहित्य-सम्मेलन ने आप के 'शीतेर प्रार्थना : वसन्तेर उत्तर' को पुरस्कृत किया। कविता, आख्यायिका, उपन्यास, साहित्य-समीक्षा, रम्य रचना आदि की सौ से अधिक पुस्तको के प्रणेता। अगरेजी मे बगला साहित्य पर एक ग्रथ 'ऐन एकर आफ ग्रीन ग्रास' के लेखक। बगला के विख्यात कवि। पता . कविता-भवन, २०२ राशबिहारी ऐवेन्यू, कलकत्ता-२९।

समर्पन

नदीर बुके बृष्टि पड़े
जोयार एलो जले
लुकिये राखा आशार मतो
वाशेर फाके इतस्ततः
एकटि दुटि क्षीन जोनाकि
क्वचित् नेभे ज्वले
आकाश भरा मेघेर भारे
विद्युतेर व्यथा
गुमरे उठे जानाय शुधु
अवोध आकुलता
आकार-हीन हिंस्र खल
अनिश्चित फेनिल जल
मिलिये गेलो अदृष्टेर
मौन इसाराते
तोमाय आमि रेखे एलेम
इश्वरेर हाते ।

ताकिये थाका एकटि दीप
ज्वलछे छोटो घरे
एकटि हात एलिये आछे
कम्पमान बुकेर काछे
छिन्न स्मृति शेलाइ करा
शीतल कांथार परे
मने पडार इन्द्र जाले
झापसा होलो द्वार
आमार हाते लाफिये ओठे
तीक्ष्ण तलोयार
सुदूर काले हारिये जावा
देशान्तरी उठलो हावा
छेलेवेलार गन्ध भरा

अन्धकार राते
आमार प्रेम रेखे एलेम
इश्वरेर हाते।

पालेर माझे भविष्येर
गर्भ उठे फूले
अनागतेर रुद्ध चापे
पाटातनेर पाजर काँपे
त्रस्त माछेर अस्थिरताय
गोलुई उठे दुले
कठिन हाते नाविक धरे
आकाक्षार हाल
कपट स्रोते भासे आमार
मृत देहेर छाल
हृदयतले दाडेर टाने
अमर नाम प्रलय आने
ढेउएर आर दिनान्तेर
माताल सघाते
आमार प्राण रेखे एलेम
इश्वरेर हाते।

उलटो दिके छुटलो आमार
आधार आराधना
असीम नील घुमेर परे
यन्त्रनाय जडिये धरे
मुक्तिहीन जागरनेर
मूर्ख प्रतारणा
तबुओ आछे एकटि घर
कुजलताय घेरा
दावाय वसे जटला करे
पुर्व पुरुषेरा

तादेर मृदु फिशफिशानि,
पड्डक झरे सावधान
हाजार बार सशोयर
अन्ध अजानाते
आमि तोमाय रेखे एलेम
इश्वरेर हाते ।

समर्पण

रिमझिम लगी नदी के ऊपर
ज्वार उठा है जल में
जैसे गुप्त रखी आशा हो
यहां वहां बांसो के फांको
कभी एक दो टिमटिम टिमटिम
जुगनू बुझते वलते

भरा गगनतल व्यथा भार से
बिजली का जी जलता
भर कराह जतलाता केवल
अतहीन आकुलता
वह आकार-विहीन, हिंस्र, खल
बेहद बेहिसाब फेनिल जल
मौन इशारे से अदृष्ट के
गुम हो गया बिखर के
तुम्हें छोड़कर आया हूं मैं
हाथो में ईश्वर के ।

अपलक दिया एक जलता
छोटे से घर के भीतर
एक हाथ बेवस है लुढका
कपमान छाती के ढिग जा
जर्जर स्मृति की सिली हुई
शीतल कथरी के ऊपर

मृदु बिसुरन के इन्द्रजाल से
धुंधला हुआ किवार
लपक हाथ में उठ आती
मेरे तीखी तलवार
गुमी सुदूर काल के हियतल
देशांतरी बयार पड़ी चल
छुटपन की खुशबू से महमह
गात अँधेरी भर के
अपना प्रेम छोड़ आया मैं
हाथों में ईश्वर के।

उभर गर्भ आता भावी का
पालों की सलवट में
अन आगत की रुद्ध चाप से
पंजरे कँपते नदी पाट के
हिलहिल उठती पलुई
भीता मछली की छटपट में

अभिलाषा-पतवार सख्त हो
नाविक लेता थाम
कपट स्रोत में बहता मेरे
मृत शरीर का चाम
हिय में डांडों के कर्षण से
प्रलय अमरता आता है ले
लहर और सीमा के—
मतवाले संघर्षों पर से
अपने प्राण छोड़ आया मैं
हाथों में ईश्वर के।

तिमिर अर्चना भाग चली
मेरी विपरीत दिशा को
नील असीम नींद के ऊपर
विकल यन्त्रणा से हो कातर
लिपट पकड़ कर मुक्तिहीन
जागृति की मूर्ख दया को

फिर भी खडा एक घर साबित
कुजलता का घेरा
जहां लगाते जमघट, डाले
पूर्व पुरुषगण डेरा

उनका वह धीमा धीमा स्वर
सजग बरसता रहे निरतर
अनगिन भय सशय के
अधे अनजाने से स्वर में
तुम्हे छोड कर आया हूँ मै
हाथो में ईश्वर के।

कवि श्री यशवन्त दिनकर पेंढारकर
रूपान्तरकार श्री प्रभाकर माचवे

चाफल (उत्तर सतारा) मे ६ मार्च १८९९ मे जन्म। मराठी मे रवि किरण-मडल के एक प्रमुख सदस्य। १९३५ मे शारदा-मडल बडौदा के सभापति, १९५० मे बम्बई मराठी साहित्य-सम्मेलन के सभापति बडौदा सरकार द्वारा राजकवि के नाते १९४० मे सम्मानित। प्रकाशन सात कविता सग्रह (जिन मे 'यशोधन' बहुत प्रसिद्ध हुआ), तीन खडकाव्य, गद्य के दो ग्रथ और बच्चो के लिए सात पुस्तके। पता १९६।३४ सदाशिव पेठ, पूना–२।

पुकार

'आलो मी, आलो मी" करि पुकार कोण तरी ?
येणारा नोहे हा राजा वा माधुकरी
हा पुकार घुमवी नरहृदयीचा नारायण
दाहि दिशा करिती पडसादानी पारायण

हा पुकार सागतसे सरला दुरिताधकार
तेजाच्या झारीतुन वर्षत चैतन्य-धार
ता म्हणतो भयभीता "झणि उघड टाक दार
व्यर्थ तुझी व्हायची न ह्यापुढनी लूटमार
तेंवि ना क्षमा तयास होउ म्हणे जो चुकार
वृक्षाच्या वाढीला वाडगुळें जाच, भार

खाटल्यावरी कुणास नाही देणार हरी
श्रमिकाच्या पाठीशी मात्र उभा गिरिधारी
घामातुनि दरवळेल कस्तुरिचा घमघमाट
आणि झलबेल तसा रत्नाचा लखलखाट
रे, नागर फालानें निज ललाट-लेख लिहा
काली ही कामदुधा होते की नाहि पहा"

ही ग्वाही देणारा ठाके हा कामकरी
निर्धारे ह्या नटला साभिमान शेतकरी

"आलो मी, आलो मी" कोण करी हा पुकार
दुबलथाना धीराचा वाटावा जो विसार
"लाविसि का भाली कर ? का अश्रू ढालतोस ?
भाग्यास्तव कोणाचे उचलतोस पायपोस ?
रे मूढा, ह्यापुढती काय हवी लाचारी ?
रे, ज्याचा तोच इथे—कोण दुजा उद्धारी ?
येथ आडकाठी नच आवडत्या उद्योगा
ग्रह राशी सर्वकाल पुरवितील शुभयोगा
अथरुणास्तव कोणा नलगे ती दगड-धूल
असलें तर फक्त पूर्वसचितात शोकमूल
एरव्ही न कांहि उणें राहणार ससारी
पोहतील अवघे संतोष-सुखा माझारी"

हा पुकार घुमवी नरहृदयीचा नारायण
दाहि दिशा करिती पदसादानी पारायण

"आलो मी, आलो मी !" देई ही कोण हाक ?
हाके मधि भरली त्या जरब कुणा, काय धाक !
"येथ अग्रपूजेचा मानकरी नच धनाढ्य
हार-तुरे त्याजलाच जनहितकर जो गुणाढ्य
रेटणार नाहिं कुणी कोणाचा येथ बाध
पीडतील नच पुढती दडहम्त दुर्मदाध

न्यायदेवि ना गणील मतलबी कटाक्ष-खुणा
शास्त्यामधि जनतेचा पुरता निर्धास्तपणा
फाकतील बुद्धीचे जे जे उन्मष नवे
ठरतिल ते सुहृदाचे मनुजा कल्याण-दुवे"

ललकारत आला युगनिर्माता भालदार
खडसावुनि सकलाना सागत को व्हा हुशार

'आलो मी, आलो मी ।" कोण करी हा पुकार
जो का क्षतविव्हलास दिव्य औषधोपचार
"आता रणमैदानी थाटतील उद्याने
शस्त्रास्त्रे तरि कशास ऋषिमुनिच्या अस्थिविणे ?
कर्तव्याविण कोणा नाहि जात, नाहि धर्म
दुस-याच्या क्षेमाचे अध्याहृत ज्यात वर्म
प्रभुन्या अवतारास्तव ससृतिच्या मदिरात
पुरुष-स्त्री जणु नदादीपातिल जोड वात
पूर्व थोर सस्कृतिची चित्तामधि चाड धरा
का विलब मग व्हाया स्वर्गाहुनि रम्य धरा"

हा पुकार घुमवी नरहृदयीचा नारायण
दाहि दिशा करिती पडसादानी पारायण

"आलो मी, आलो मी !" काल नवा देइ साद
ह्या मराठ कवनी तो ऐका भावानुवाद

पुकार

'आया मैं, आया मैं', कौन कह रहा पुकार
आनेवाला न अरे राजा या भिक्षु सार।
यह पुकार उसकी जो नर-उर में नारायण
दशदिशि में गुंजित है प्रतिध्वनि का पारायण।
यह पुकार कहती है विलमा दुरिताधकार
तेजस् की भारी से बरसी चैतन्य-धार।

वह कहता भीतो से· "रख दो अब खुले द्वार
व्यर्थ नहीं होगी अब तेरी कुछ लूटमार।
अब न क्षमा उसको जो काम से बचे असार
वृक्षो के विकसन में पर-पुष्टक कष्ट, भार।
खटिया पर बैठे को देगा नहीं कोई हरी
श्रमिको के पीछे सदा खड़ा हुआ गिरधारी।
उनके पसीने से कस्तूरी महकेगी
पसीने की बूंदो से रत्नमाल चमकेगी।
रे, हल के फाल से ललाट-लेख लिखो, लिखो
काली मिट्टी भी कामधेनु बनती देखो।"

आये यह साक्षी बन कमकर, मजदूर,
निश्चय लेकर आये गरवीले ये किसान

'आया मै, आया मै', कौन कह रहा पुकार
दूर्बल को धीरज जो देता है नित उदार
"क्यो सिर पर हाथ धरे आसू तुम ढाल रहे ?
भाग्य के लिए किसकी जूतियां उठाते हो ?
मूढ ! व्यर्थ मन में हो लाचारी पाल रहे
दूसरा न हर कोई उद्धारक अपना हो !
यहां नहीं कोई भी बाधा प्रियोद्योग में
ग्रह-तारे सदा तुझे सहायक सुयोग में
किसी को भी बिछाना न पत्थर या सिर्फ धूल
हो भी तो पूर्व-भाग्य में शायद शोकमूल
अन्यथा न कुछ भी हो कमी किसी के घर में
तैरेंगे सब सुख औ' सतोष-सागर में"

यह पुकार उसकी जो नर उर में नारायण
दशदिशि में गुंजित है प्रतिध्वनि का पारायण

'आया मै, आया मै !' कौन कह रहा पुकार
इसमें है डाँट किसी को तो किसी को अ'धार।
"यहां अग्रपूजा का हक़दार ना धनाढ्य
मालाए फूल उसी को जो जन-हित-गुणाढ्य
कोई भी रोकेगा नहीं किसका भी मार्ग,

दण्डहस्त दुर्मदांध दगे नही पीडा-भाग
न्यायदेवि ! स्वार्थ के कटाक्ष मत मानना
शास्ता में जनता का पूरा विश्वास बना।
नये नये उन्मेष वृद्धि के जहाँ फैले
मनुज मात्र कल्याण-कारक हों सुहृदों के।"

ललकार देता युगनिर्माता चोबदार
सबको कहता है, रहो होशियार, होशियार !

'आया मैं, आया मैं !' कौन कह रहा पुकार
जो कि क्षताकुल जन को दिव्य औषधोपचार
"अब होंगे उद्यान कल तक के समर स्थान
शस्त्रास्त्र होंगे बस ऋषिमुनि के अस्थि-दान
कर्तव्य छोड नहीं कोई भी जाति, धर्म
क्षेम दूसरे का यही अध्याहृत एक मर्म
संसृति के मंदिर में प्रभु के अवतार हित
पुरुष और नारी दो वर्तिकाए एकत्रित"

यह पुकार उसकी जो नर-उर में नारायण
दशदिशि में गुंजित है प्रतिध्वनि का पारायण।

कवि · श्री जी० शंकर कुरुप
रूपांतरकार : श्री रामधारी सिंह दिनकर

उत्तर त्रावनकोर में १९०० में जन्म। महाराजा कालेज, अर्नाकुलम् में संस्कृत और मलयालम के प्राध्यापक। समस्त केरल साहित्य परिषद् के मंत्री तथा 'परिषद्-पत्रिका' के संपादक। १९१७ में 'साहित्य-कौतुकम्' पहली पुस्तक छपी। बाद में इसके चार भाग छपे। अब तक बीस कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं, जिन में 'संध्या', 'निमिषम्', 'मुत्तुकल', 'चेंकदरिल्' आदि बहुत प्रसिद्ध हैं। आप प्रकृति के प्रेमी और प्रतीकवादी कवि के नाते केरल में प्रसिद्ध हैं। आप ने उमर खय्याम की रुबाइयों और 'मेघदूत' के मलयालम में अनुवाद किये। पता : महाराजा कालेज, अर्नाकुलम्। साहित्य अकादेमी के मलयालम सलाहकारी बोर्ड के सदस्य हैं।

वन्दनं परयुक

वन्दन परयुक, भारताम्बिके, देव
तन् दयवर्काहिस तन्नसिधारयिल्क्कूटि
दूर दुष्करयात्र निर्वहिच्चिचता, दीना-
कारयायालु रक्त मेय्यिल् निन्नोलिच्चालु,

इन्नले पुच्छिच्चोरु राज्यलक्ष्मिवन्नेल्ला
उन्नतात्भत स्नेहमधुर पुणरवे,
मगल स्वातन्त्र्यत्तिन्नुज्वलोज्वलमाय
मजुल प्रभातत्तिलविडन्नेत्तिच्चेर्न्नु ।
प्राचियु प्रतीचियु मुडक्कु जयारव
वीचियायुयर्न्नेत्ति मुक्कुन्नू हिमवाने ।
पौटर् तन् हृन्नीडत्तिल् निन्नुयर्न्नानन्दडल्
सौरमार्गत्तिल्च्चेल्वू कोटि तन् चिरकिन्मेल् ।
रक्तदाहमार्न्नोरु साम्राज्यसिहत्तिन्टे
शक्तवु कुटिलवुमायिरुन्नता दष्ट्र
काणुक, कोडिञ्ञाता किटप्पू निर मडि
त्ताणपो चन्द्रक्कलपोलेयिप्पलरियिल ।
इरुलिल् त्तिलडिय कण्णुकल्, चरित्रत्तिन्
अरुकिल्क्काणा मायु रण्टु तारकल् पोले ।
निन् मुग्धमाकु कालिल्स्सटयाल् परुषमा
नन् मुखमुराम्मक्कोण्टावृद्ध मिह निल्पू ।
वन्यनोतिकलतु केवल मरक्कुमो ।
वन्यमा निन् सौहार्द्दमन्नन्नु पुलर्त्तुमो ।
वन्दन परयुक धर्मपालिके, दैव
तन् दयक्कान्नन्दाश्रु गद्गद स्वरयायि
पावने, पौरस्त्यमा दिङ्मुख तुटुक्कुन्नू
तावक स्वातन्त्र्यत्तिन् स्वच्छमामुदयत्तिल्
एन्तिनिडने शोणशोणमाकुवान् ?—श्रोत्तालि
निन्तिरुवतियुते हृदय तकर्न्नु पो ।
इन्नलेत्तिरुवटल् वरियेच्चुट्टिच्चुट्टि
अन्नेटु कडुमरत्तिकल् नावुकलाट्टि,
आइर करिन्तुरुकरयिल् वकूटित्तन्टे
वायिटक्किकटेक्काट्टिप्पुलयु स्वेच्छातत्र
विडुडि ञोरिच्च निन् प्रियपुत्ररिल् तन रक्त
ओड्डकुन्नतुण्तावामिप्पोड्डुमितिन् पिये ।

ग्रामवु नगरवु वयलु काटु मेटु
आ महाधीरन्मार् तन् विटरु स्मृतिकलाल्
अव तन्नितलुकल् वीशिटु वर्ण्णङलाल्,
अवयिल्त्तिङु त्यागोन्माद सौरभङलाल्
इन्नु कोल्मयिर् कोल्वू, निन् कण्णिल् निन्नुं रण्टु–
मून्नु निर्मल स्नेहानुग्रह कणिककल्
पूतमा स्वातन्त्र्यत्ते श्वसिक्कान् जीविक्कात
अस्वातराय वीणा वीरपुत्ररिलप्पोडिञ्ञावू ।
वन्दन पग्युक वीरमातावे, दैव–
तन् दयक्कभिमानदीप्तममात्मावोटे !
चडल विधिकृतमेन्नुवेच्चद्दास्यत्तिन्
तोडल तान् तनिक्कलङ्कारमाय वारित्तूक्कि,
भीरुवाय्–स्वातन्त्र्यमेन्नुच्चरिक्कुवान् पोलु
भीरुवाय्–तलर्न्न निन् जीवित मयङुंपोल्
निन्मान्य पुत्रन् वीर 'तिलकन्' स्वातन्त्र्य तन्
जन्मावकाश तानेन्नाद्धमाय् प्रख्यापिक्के
नडुंङी निन्नात्मावु "यूणियन् जेक्को" टुन्न
नट्टुतामत्युद्धतध्वजत्तिन् तरयोटे ।
एकिलुमतिन् कट पुडडील तिन्निरुल्
तकिटुं निडल् नीङू निन् चरित्रत्तिल्क्कूटि ।
क्रूरमामतिन्नटि कुतिरान् स्वरक्त नी
धारधारयायेत्र पकर्न्नीलतिल्प्पिन्ने ।
एत्रयो किरीटत्तिन् कललटिच्चुरप्पिच्चोर्
अत्तरक्कुमेलेत्र साहस तकर्न्नील ।
धर्मत्तिन् नवायुधशालयिल् निन्नु पिन्ने
कर्मकोविदनाय राष्ट्रीयमहायोगि
यालिनाल् मुरियाते, तीइनाल् दहिक्काते
वाच्चिट्टमोरायुध पुतुतायटुत्तत्ति ।
विनयं पठिच्च पोलक्कोटियिता, धीर
सुनये, निन पादत्तिलत्तल ताड़ति निन्नल्लो ।

वन्दन परयुक विश्ववन्दिते दैव
तन् दयवकाशाफुल्ल स्वच्छ मानसत्तोटे ।
काल निन् धर्मार्ज्जित स्वातन्त्र्यमुद्घोषिप्पान्
नील निर्मल शब्दगुणकाकाशत्तिने,
नोक्कुक महाघण्टयाक्कि वार्त्तु, नालु
दिक्कुकलिरुल तुणियतिल निन्नूर्त्तीटुन्नु
श्रोलमा मणियता ञालुन्नू महाविश्व
शाल तन् मध्यत्तिकल् प्रियदर्शनमायि
मुम्परिञ्ञिट्टिल्लात्त मादकस्वातन्त्र्यत्तिन्
सम्पन्न पानत्ताल कूत्ताटुमोरो काट्टु
चलिक्केच्चलिक्के निन् पूर्ण मगलत्तिन्ट
ओलि तान् तुलुम्पुन्नु चक्रवालत्तिन् वक्किल्
वोर मद्दल मुखनिग्गलक्कालारावो
दारमाक्कुन्नू म्न्नु सागरमीस्सन्दर्भ ।
शारद दिनोदयश्री निवर्त्तुन्नू स्वच्छ
गौरमा वेलिच्चत्तिन् वेण्कोट्टक्कुट मन्द
उन्नत स्वातन्त्र्यत्तिन् रत्न पीठत्ते, देवी
वन्नलकरिच्चालु ! निन् नाम मुडङ्ङ्टे
नूरु भाषयिल्, नूरु नूरु गानत्तिल्, नूरु
नूरु नूरन्ताराष्ट्र मण्डलङलिलम्मे !
वन्दन परयुक रजितविश्वे, दैव
तन् दयक्कुल्वकन्धर सुन्दराननत्तोट !
श्रब, निन् स्वातन्त्र्यत्तिन् चिह्नत्तप्पारिक्कुन्नि
तवर नीलच्छायमाय निन् कवचत्तिल्
उन्मुख हिमवानु विन्ध्यनु मलयनु
नम्मुटे पताकयुल्पुलक दर्शिक्कट्टे ।
राडुमिन्नविटत्तेयभिमानत्तोटोप्प
पोडुमी त्रिवर्णडल् चक्राकमनोज्ञडल्
लीलयिलपूर्वाभिमानत्तिल् पाटु मल
चोलकल् पोलु मारिल् ञेरि मेल् कत्तीटुन्नू

नालेयी स्वातन्त्र्यत्तिन् चिरकिन् काट्टेट्टिट्टु
नीलेयेडलयाड़ि हर्षत्ताल् विजृम्भिक्कु
नालेयीस्समाधान वाग्दान कण्टिट्टरे
नाट्टुकलाशा पिंछ विरुत्ति नृत्त चेय्यु
ई अजय्यतयुटे निडल काणुम्पोल तोक्किन्
वाय तन्नत्तान् पोत्ति निल्कुमक्रमि राज्य
भयमे दूरे दूरेयाशके । नवयुगो-
दयमायतिन् रश्मिपूशुमीक्कोटि कण्टो ?
मेट्टुकल्, वयलुकल् काट्टुकल्, कटलुकल्,
नाट्टुकल्, नगरडलोक्केयु मेले मेले ।
ईयनुग्रह नूकु कोटि तन् धीर स्निग्ध–
छाययिल् प्रापिक्कट्टे शान्तियुमैश्वर्यवु ।
वन्दन परयुक राष्ट्रनायिके, दैव
तन् दयक्कभगुर मगले जयिच्चालु ।।

करुणामय की करुणा को शतशः धन्यवाद

करुणामय की करुणा को शतश: धन्यवाद ।
हे जननि ! अहिंसा की असिधारा पर पग धर
दुष्कर यात्रा कर पूर्ण श्रमित-पद, क्षाम, क्षीण,
अन्तत., रक्तपंकिल गात्रे ! तू पहुँच गई
उस ओर, जहां मुसकाता है—
उज्ज्वल स्वतन्त्रता का मजुल-मंगल प्रभात

सारी वसुधा आनन्दलीन,
है गूंज रहा स्वागत में हर्ष विकल कलकल
उल्लसित पूर्व पश्चिम के ये गोलार्ध युगल,
दाएँ-बाएँ उठ रही जय-ध्वनि की तरग,
उन्नत हिमाद्रि का भाल भींगता जाता है ।

उठ रहा तिरंगा आच्छादित कर सौर-मार्ग,
जाग्रत जन-मन में ऊर्ध्वगमन की अभिलाषा।
जनता के हृत्पिजड से कढ आनन्द-विहग
ऊपर झंडे के पास पहुँच मँडराते हैं।

वह उधर क्षितिज के पास अधोमुख कान्तिहीन,
जो डूब रही है मन्द प्रभा,
वह नहीं चन्द्र की कला,
कुटिल शोणित-पिपासु साम्राज्यवाद की दंष्ट्रा है।
वे दो तारे जो दीख रहे हैं अस्तमान,
आँखें वे इसी दनुज की हैं
अँधियाले में डूबी प्रकाश की कणिकाएं,
इतिहास-गर्त में पड़े हुए अंगारों सी।

कल तक जो हँसी उड़ाती थीं,
तुझको पीड़ा पहुँचाती थीं,
वे राजलक्ष्मियां आज चकित-विस्मित विभोर।
घर-घर से बाँह बढ़ाती हैं,
तुझको अपनी अग्रजा मान,
फूलों के हार पिन्हाती हैं।

मां! देख, मुग्ध यह वृद्ध सिंह
कैसे चरणों से सटा खड़ा,
तेरे पद को निज जिह्वा से सहलाता है।
पर, हाय! कहीं यह वन्य जीव
रक्तावक्त जिघांसा को तजकर,
करता भारत का शीलग्रहण,
बन पाता तेरा अमिट मित्र।

करुणामय की करुणा को शतश धन्यवाद।
हे धर्मपालिके! परम पावनी मां तेरे,
सौभाग्य-उदय से यह कैसी लाली छिटकी,
संपूर्ण पूर्व-जग का आनन जगमगा उठा।

है कहां आज स्वेच्छाचारी वह कुटिल तंत्र,
जो अंध कालकक्षों के भीतर जीभ खोल,

अथवा फांसी के तख्तों पर फण फुला फुला,
तेरे निरीह पुत्रो का शोणित पीता था ?
हो गये तिरोहित कालनाग,
हो गये तिरोहित मा तेरे वे वीर तनय,
जिनके शोणित से भाग्य देश भर का जागा,
पर, हाय ! जिन्होंने स्वाधीनता नहीं देखी ।

उन वीर हुतात्माओ की स्मृति के रुचिर फूल
उन धीर शहीदो की पंखडियों की लाली,
उन अजय योगियो के जीवन की त्याग सुरभि,
वे मिटे नहीं, सब जीवित हैं ।
उनसे ही तो सुरभित हैं अपने ग्राम-नगर,
उनसे ही तो शोभित हैं ये वन-विपिन-खेत,
भुज उठा खड़े हैं उनकी पूजा में पहाड,
नदियां गुण गाती हुई सरकती जाती हैं ।
मां आज पुण्य का पर्व, शहीदो की स्मृति में
अपने कृतज्ञ दो अश्रुविन्दु ढल जाने दे ।

करुणामय की करुणा को शतश. धन्यवाद ।
वह भी था मातः एक समय
जब हम जडता में पड़े हुए अवसाद ग्रस्त,
दासत्व-पाश को कह विधि का अविचल विधान
सोये थे हो निश्चेष्ट,
मुक्ति के हित आयास न करते थे
ऐसी कदर्यता थी, मुख से
स्वातत्र्य शब्द कहने में भी हम डरते थे ।
तब फटी भीरुता की बदली,
उच्चरित हुआ गगाधर के दुर्वार कठ से महासत्य,
केसरी तिलक की वाणी मे,
जागत स्वदेश का कंठीरव
प्लुत में चिग्घार पुकार उठा·—
'स्वातत्र्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार ।'
इसे जैसे भी हो, हम पायेंगे,

मस्तक का दे बलिदान,
मुक्ति की मणि का मोल चुकायेंगे।

फट गई भीरुता की बदली,
फट गया गहन तम किमाकार
नदियों का जल खलभला उठा,
करवट लेकर जागे पहाड़।
यूनियन जैक तिलमिला उठा,
ध्वज कांपा नीचे नींव हिली,
सत्ता का आनन म्लान हुआ,
जनता को नूतन ज्योति मिली।
तब से तूने जाने कितने पावक-शायक सधान किये,
जानें होमें कितने सपूत,
कितने किशोर बलिदान किये।

यूनियन जैक का उन्मूलन, पर हो न सका।
सोने चाँदी से पिटा हुआ ध्वजपिंड मूल में था दृढ़तर,
थे किये हुए उसको अजेय,
चरणों को कस कर गहे हुए निर्लज्ज किरीटों के पत्थर।

इतने में सत्यव्रती योगी,
कर्मठता के पूर्णावतार,
गांधी आये, खुल गया
धर्म के शस्त्रालय का नया द्वार।

यह धर्मशस्त्र जो नहीं आग में जलता है,
जिसको न काट सकतीं लोहे की तलवारें,
जो अयस और प्रस्तर, दोनों पर ही, समगति से चलता है।
है धन्य वीर जो यह धर्मास्त्र उठाता है,
सौ बार धन्य वह पुरुष अहिंसा के सम्मुख
जो खड्ग फेंक लज्जित हो शीश झुकाता है।
यह उसी पुण्यमय महाशस्त्र का फल सुन्दर,
जो ध्वजा शूलवत् कभी हृदय में चुभती थी,
लहराती है वह विनयशीलता में भर कर।

करुणामय की करुणा को शतशः धन्यवाद ।
हे जगत्पूजिते विश्वधाम के मध्य-स्थित,
घटावत् स्वगुणमय व्यापक यह महाव्योम,
तेरी महिमा नित गाता है,
त्रिभुवन को तेरी धर्मार्जित पावन स्वतंत्रता का सदेश सुनाता है ।

बह रहा क्षितिज को छू उद्वेलित मुक्त पवन,
वन-राजि मुक्त हो सजती है,
द्रुम के पत्तो में अनिल नहीं सीत्कार रहा,
हरियाली में मांगलिक बीन यह बजती है ।
तीनों समुद्र हुकार रहे गभीर नाद,
गर्जन में भेरी की गत है ।
उस मन्दिर के ये ताल भव्य जिसका किरीट
अवनीतल का सर्वोच्च शृ ग हिम-पर्वत है ।

प्रस्तुत स्वतत्रता का यह मणिमय सिहासन,
बैठो मा ! हम मिल कर आरती सजायेंगे,
नाना भाषाओ में लिक्खेंगे एक नाम,
नाना छन्दों में एक गीत हम गायेंगे ।

करुणामय की करुणा को शतशः धन्यवाद ।
मात. तेरे चक्राक-केतु को व्योमदेव
सादर सुनील निज कचुक पर लहराते हैं,
मस्तक उन्नत कर मलय, हिमालय, विन्ध्याचल,
झडे की छवि को देख छके रह जाते हैं ।

स्वातन्त्र्य-गरुड़ का पक्ष तीन रगो वाला,
इसके झोके सर्वत्र सौख्य सरसायेंगे,
जिस दिवस पडेगी भूतल पर छाया इसकी,
पुलकित प्रफुल्ल सातों समुद्र लहरायेंगे ।

यह शान्ति सुन्दरी के हाथों का इन्द्रधनुष,
कल इसे देख आशा के रजित पिच्छ खोल,
नाचेंगे राष्ट्रो के मयूर, उत्सव होगा,
इस अविजेयता की छाया को देख भीत,

अत्याचारी झुक जायेंगे ।
बन्दूकों के मुख अनायास मुद्रित होंगे,
सुस्तायेगा संसार शान्ति की छाया में
निश्चय विमुक्त युद्ध के रोग से भव होगा ।

हो दूर भविष्यत् की चिन्ते, मानस के भय,
री आशके, अब और नहीं आतंक जगा ।
हो चुका उदित प्राची के तट पर युग नवीन,
यह केतु उसी की किरणो में लहराता है ।
इस महाकेतु के नीचे सारे ग्राम नगर,
सागर-उपसागर, शैल शृंग वन-विपिन-खेत
युग युग भोगें सुख-शान्ति स्नेह में बँधे हुए ।

करुणामय की करुणा को शतश धन्यवाद ।
भारत का मन सारी वसुधा से एक रहे ।
अयि राष्ट्र-नायिके, मंगलमयि, तेरा जय हो !

कवि · श्री मैथिलीशरण गुप्त

जन्म १८८६, चिरगाँव झाँसी। सन् १९०७ से 'सरस्वती' के माध्यम से कविता के क्षेत्र मे प्रवेश किया। 'भारत भारती' द्वारा प्रचुर ख्याति मिली। अनेक उपेक्षित विषयो को लेकर प्रबन्ध काव्यो की रचना की। साकेत, यशोधरा, पंचवटी, जयद्रथ-वध, काबा और कर्बला, अर्जन और विसर्जन, सिद्धराज, झकार और द्वापर प्रमुख काव्यग्रंथ है। बगला के प्रसिद्ध काव्य मेघनाद-वध, तथा विरहिणी-व्रजागना और पलासी का युद्ध, तथा अगरेजी से रुबाइयात उमर ख़ैयाम आदि का अनुवाद किया। 'जयभारत' नामक बृहद् काव्यग्रथ हाल ही में प्रकाशित हुआ है। आजकल राज्य-सभा के सदस्य हैं। नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली मे रहते हैं।

ध्वज-वन्दना

निज विजय पताका फहरे,
मुक्त वायु-मण्डल मे अपनी मानस-लहरी लहरे।
जय मैत्री करुणा-धारामय यह ध्वजचक्र हमारा,
कभी क्रांति का सूर्य यही है, कभी शान्ति शशितारा।
हमे विजय का सूत्र मिला है, इसी चक्र के द्वारा,
रक्षक यही, सुदर्शन अपना, किरण कुसुम-सा प्यारा।
कालचक्र यह हाथ हमारे, लक्ष्य क्यो न थक थहरे ?
निज विजय पताका फहरे।

कर्मक्षेत्र हरा है अपना, ज्ञान शुभ्र मनमाना,
बलि बलवती विनीत भक्ति का कल केसरिया बाना।
इस त्रियोग के तीर्थराज मे हमे स्वधर्म निभाना,
अपनी स्वतन्त्रता से सबका मुक्तिमन्त्र है पाना।
सब समान भागी जीवन के यही घोषणा घहरे,
निज विजय पताका फहरे।

त्याग हमारा धर्म, किन्तु हम हरण कभी न सहेंगे,
दानवत्व से मानवता का वरण कभी न सहेगे।
किसी आततायी का तुष्टीकरण कभी न सहेगे,
और कही भी व्यर्थ किसी का मरण कभी न सहेंगे।
वह नरता ही क्या, बर्बरता जिसके आगे ठहरे ?
निज विजय पताका फहरे।

इस ध्वज पर जूझे स्वजनो पर ध्यान जहाँ जाता है,
मस्तक ऊँचा होने पर भी मन भर-भर आता है।
निर्भय मरण वरण कर ही नर अमर कीर्ति पाता है,
ऐसे पुत्रो की ही आशा रखती भू-माता है।
भू-माता का यह अचल-पट छाया करके छहरे,
निज विजय पताका फहरे।

जन्म १८९७, मयाना गाँव, उज्जैन। राष्ट्रीय सक्राति-काल मे 'विप्लव गान' शीर्षक रचना बहुत लोकप्रिय हुई। रचनाए कुकुम, अपलक और क्वासि नामक सग्रहो मे सगृहीत है। आचार्य विनोबा भावे के भूदान-यज्ञ से प्रभावित होकर विनोबा-स्तवन की रचना की है। कार्यक्षेत्र आदि से ही कानपुर रहा है। देश के स्वतत्रता-सग्राम मे प्रमुख भाग लिया। आजकल ससत्सदस्य हैं, ५ विडसर प्लेस नई दिल्ली मे रहते है।

जन-तारिणि, मन-दैन्य-हरणि, हे!

जन-तारिणि, मन दैन्य-हरणि, हे!
विभु-भुज-वन्दिनि, दृग-आनन्दिनि, तिमिर-निकन्दिनि, ज्ञान-तरणि, हे!
जन-तारिणि, मन-दैन्य-हरणि, हे!

१

जय जय, हे गुर्वाणि मातृ भू, जयतु, जयतु, हे परम तपस्विनि,
जय, हे भक्ति मालिके, जय, हे जग पालिके, अजस्र-पयस्विनि।
राम-कृष्ण-जिनदेव तथागत-जननि, जयतु हे गान्धी-प्रसविनि,
जय, ध्रुवस्वामिनि, मोक्ष-प्रदायिनि, जय, गगा-तरणिजा सरणि हे।
जन-तारिणि, मन-दैन्य-हरणि हे।

२

ओ माँ ! तव अचल में संचित युग-युग का इतिहास अमर, चिर,
तव मलयानिल घोर श्वास में सन्तत गति उल्लास अजर, स्थिर।
ध्यान निमीलित तव दृग-पुट मे आए है ये नवल स्वप्न घिर,
हम क्षण-भंगुर, तव प्रसाद से बने सनातन मातृ-धरणि हे !
जन तारिणि, मन-दैन्य-हरणि, हे !

३

माता किया तुम्ही ने तो था सर्वप्रथम दिक्-काल-अतिक्रमण,
और, तुम्ही ने रहसि किया था अनाद्यन्त के संग सन्तरण।
तुम कितने ही मन्वन्तर-गिरि-शृंगो का कर चुकी सभ्रमण,
जग ने तुमही से पाया है मुक्ति-मंत्र, कल्याण-करणि, हे !
जन-तारिणि, मन-दैन्य-हरणि, हे !

४

वीत-रागिणी तुम अनुरागिणि, अवलोको अपने ये जन-गण,
इनका हिय झकझोरो, ओ माँ, कर दो सत्-प्रेरित इनके मन।
भस्मसात् कर दो क्षण में तुम, ये निम्नगा-वृत्ति के कर्षण,
आज दीप्त कर दो वेदी तुम अग्नि पुंज हे, यज्ञ-अरणि, हे !
जन-तारिणि, मन दैन्य-हरणि, हे !

५

बल दो, माँ, निष्कासित कर दें हम भीतर का गरल हलाहल,
बल दो, शान्त कर सकें हम निज अन्तरतर की शोणित-खल-भल।
नव विहान वेला में हम भी बने आज नव मानव निश्छल,
तव अतीत के हम प्रतीक हो, यह बल दो नव-भाव-भरणि, हे !
जन-तारिणि मन-दैन्य-हरणि, हे !

६

आखो में हो तेज, भुजो में शक्ति, हृदय मे दृढता अविचल,
कर्मों में हो यज्ञ-भावना, मन में हो सन्निष्ठा का बल।
प्राणो को नव-सृजन-प्रेरणा उत्प्राणित करती हो पल-पल,
यह वर दो अपने पुत्रो को, धर्म-धारिणी, चित-विहरणि हे।
जन-तारिणि, मन-दैन्य-हरणि हे !

जन्म १६०० मे, कौसानी, जिला अल्मोडा मे। शिक्षा बनारस तथा इलाहाबाद मे पाई। असहयोग आदोलन मे पढाई छोड दी। तब से अनवरत साहित्य-सेवा कर रहे हैं। रचनाएं : उच्छ्वास, वीणा, ग्रन्थि, पल्लव, गुंजन, युगान्त, युगवाणी, पल्लविनी, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, उत्तरा, रजत शिखर, शिल्पी और अतिमा काव्य-सग्रह है। ज्योत्स्ना नाटक है। गद्य मे कहानियों का एक संग्रह 'पॉच कहानिया' तथा 'गद्यपथ' प्रकाशित किया है। नवीन कविता-संग्रह अतिमा अभी प्रकाशित हुआ है। आजकल आकाशवाणी के हिन्दी कार्यक्रमो के प्रमुख निर्देशक हैं। इलाहाबाद में रहते हैं।

भारत दर्शन

(भारत के सास्कृतिक कार्यक्रम को श्रद्धाजलि)

आज सूक्ष्म दर्शन से जगता, मनोनयन मे,
भारत का आनन हिरण्य स्मित,—जीवन कण के
तम से पर, आदित्य वर्ण उसकी आभा का
भूत शिखर के चरण चूड़ सा शत सूर्योज्वल !

ह्रास नाश से रहित, अमर चेतना शक्तिया,
वह अन्तर्हित किये हृदय मे, सूक्ष्म, सूक्ष्मतम,

गुह्य रहस, वर्णनातीत जग के मगल हित।

उसके अन्तरतम के ज्योतिर्मय शतदल पर
स्वय खडे है, सत्य चरण धर, अविनाशी प्रभु,
तेजोमय, जाज्वल्य, हिरण्य-शैल से अद्भुत!
पुरुप पुरातन.. पुरुष सनातन, विश्व मोहिनी,
निज वशी के सृजननाद से जगा अचित् से,
स्वर्गिक पावक के असख्य चैतन्य लोक स्मित,
बरसा रहे अनन्त शून्य में, स्वरलय वर्तित,
कोटि सूक्ष्म सौदर्य प्रेय आनन्द के भुवन,
प्राणो की आशा, आकाक्षा से चिर उर्वर
जीवन मन के स्वर्ग, तृप्ति के सुख मे नीरव!
रूप गध रस स्पर्श शब्द के बिम्ब जगत बहु
निज असीम वैभव में अक्षय, दमक रहे जो,
सप्त चेतनाओ के रग स्वरो मे छहरे!

सयम तप के स्वर्ण शुभ्र नीहार से जडित,
भारत के चेतना शृग पर, ध्यान मौन रव,
परम पुरुष वह नृत्य कर रहे, सृजन हर्ष की
विस्मृति में लय! जिनके अति चेतन प्रकाश से
शोभा सुषमा की सहस्त्र दीपित मरीचिया
आभा की आभाएँ, छाया की छायाएँ,
दिशा काल में फूट रही, शत सुर धनुओ के,
रगो की आलोक कान्ति से सृष्टि चकित कर!

झर झर पडते सतत, सत्य, शिव सुन्दर उनके
महाकाल औ' महादिशा को चेतनता से
मुग्ध चमत्कृत कर,—रोमाचित दिव्य विभव से!

आज धरा के पूतो के इस तपस क्षेत्र में,
जीवन तृष्णा, प्राण सुधा औ' मनोदाह से।

क्षुब्ध, दग्ध, जर्जर, जनगण चीत्कार कर रहे,
घृणा, द्वेष, स्पर्धा से पीडित वन-पशुओ से,
बिखर गया मानव का मन अनुवीक्षण पथ से,
बहिर्जगत मे, स्थूल भूत विज्ञान से भ्रमित !
अन्तर्दृष्टि विहीन, मनुज निज अन्तर्जग के
वैभव से अनभिज्ञ, हृदय से शून्य रिक्त है !
आज आत्मघाती मन अपने ही हाथो से
मनुजजाति का महामरण निर्माण कर रहा
भौतिक रासायनिक चमत्कारो से अगणित !
तर्क-नियन्त्रित यान्त्रिकता के पद-प्रहार से
ध्वस्त हो रहे, अन्तर्मन के सूक्ष्म सगठन।
सत्यो के, आदर्शों के, भावो, स्वप्नो के,
श्रद्धा, विश्वासो के, सयम तप साधन के,
मनुष्यत्व निर्भर है जिन ज्योतिस्तभो पर !

ऐसे मरणोन्मुख जग को कहता मेरा मन,
और कौन दे सकता, नव-जीवन, आश्वासन,
शाति, तृप्ति, निज अतर्जीवन के प्रवाह से
भारत के अतिरिक्त आज ? जो शाश्वत, अक्षर
अतर ऐश्वर्यों का ईश्वर है वसुधा पर !
कहता मेरा मन, भारत ही के मगल से,
भू-मगल, जन-मगल, देवो का मगल है !

जन्म १९०८ में, मुंगेर, बिहार मे। प्रारम्भिक रचनाए वीर बाला और प्रण-भग विद्यार्थी-जीवनकाल में कीं। अनतर 'रेणुका' द्वारा ख्याति मिली। अन्य रचनाए हैं हुंकार, रसवती, सामधेनी, द्वंद्वगीत, रश्मिरथी, नील-कुसुम आदि। 'कुरुक्षेत्र' प्रबन्धकाव्य है, जो बहुत प्रसिद्ध हुआ। 'अर्धनारीश्वर' और 'मिट्टी की ओर' गद्य रचनाए हैं। बिहार मे अनेक पदों पर रहने के उपरात अब दिनकर ने सार्वजनिक जीवन मे प्रवेश किया है। आजकल ससद् के सदस्य हैं, और साउथ ऐवेन्यू नई दिल्ली में रहते हैं।

हिमालय का संदेश

वृथा मत लो भारत का नाम।
मानचित्र मे जो मिलता है, नही देश भारत है,
भू पर नहीं, मनो में ही, बस, कही शेष भारत है।
भारत एक स्वप्न, भू को ऊपर ले जानेवाला,
भारत एक विचार, स्वर्ग को भू पर लानेवाला।

भारत एक भाव, जिसको पाकर मनुष्य जगता है,
भारत एक जलज, जिस पर जल का न दाग लगता है।
भारत है संज्ञा विराग की, उज्ज्वल आत्म-उदय की,
भारत है आभा मनुष्य की सबसे बडी विजय की।
भारत है भावना दाह जग-जीवन का हरने की,
भारत है कल्पना मनुज को राग-मुक्त करने की।
जहां कही एकता अखण्डित, जहा प्रेम का स्वर है,
देश देश मे खड़ा वहा भारत जीवित, भास्वर ह।
भारत वहा, जहा जीवनसाधना नही है भ्रम मे,
धाराओ को समाधान है मिला हुआ सगम में।
जहा त्याग माधुर्यपूर्ण हो, जहा भोग निष्काम,
समरस हो कामना, वही भारत को करो प्रणाम।
वृथा मत लो भारत का नाम।

साधना इस व्रत को भारो।
पग-पग पर हिंसा की ज्वाला, चारों ओर गरल है,
मन को बांध शान्ति का पालन करना नही सरल है।
तब भी जो नर-वीर असिव्रत दारुण पाल सकेंगे,
वसुधा को विष के विवर्त से वही निकाल सकेंगे।
मना रहे क्यो, यह व्रतपाली केवल भारत होगा,
शेष विश्व हिंसा-लिप्सा में, इसी भाति, रत होगा।
किसी एक को नही, बदलना होगा साथ सभी को,
करना होगा ग्रहण शील भारत का निखिल मही को।
शमित करेगा कौन वह्नि प्रहरी का जाल बिछाकर,
रोकेगा विस्फोट विश्व को बल से कौन दबा कर।
तब उतरेगी शान्ति, मनुज का मन जब कोमल होगा,
जहा आज है गरल, वहा शीतल गगाजल होगा।
देश-देश में जाग उठेंगे जिस दिन नर-नारी,
साधना इस व्रत को भारी।

धर्म को, श्रद्धा को मत त्यागो।

शील मुकुट नरता का, सबसे बड़ी भव्यता का है,
नही धर्म से बढ़कर कोई मित्र सभ्यता का है।
निरी बुद्धि के लिए भावना का मत दलन करो रे,
जो अदृश्य प्रहरी है, उससे भी तो कभी डरो रे।
शान्ति चाहते हो तो पहले सुमति शून्य से मागो,
नवयुग के प्राणियो! ऊर्ध्वमुख जागो, जागो, जागो।
धर्म को, श्रद्धा को मत त्यागो।

आकाशवाणी

काव्य-संगम

१

प ब्लि के श न्स डि वी ज़ न
सूचना और प्रसार मन्त्रालय
ओल्ड सेक्रेटेरिएट
दिल्ली—८

अनुक्रम